हरिभूमि
रोहतक भूमि
रोहतक, रविवार, 10 अगस्त 2025

तापमान

अधिकतम 34 .5 डिग्री
न्यूनतम 21.0 डिग्री

11 गुरुजी ने भक्तों को राखी बांधकर दिया दीर्घायु का ...

12 कृषि विभाग का दावा: प्रदेश में 3 साल में बनाया ...

खबर संक्षेप

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर आज

रोहतक। एसएन जन वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा एक निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन 10 अगस्त को श्री सनातन धर्म हनुमान मंदिर, सुभाष नगर में सुबह 10 बजे किया जाएगा। जतिन बतरा ने बताया कि मेदान्ता फाउंडेशन, गुरुग्राम की ओर से उपलब्ध सेवाओं में रक्तचाप की जांच, रेंडम ब्लड शुगर, अस्थि घनत्व परीक्षण, हीमोग्लोबिन जांच, छाती का एक्स-रे, ईसीजी, चिकित्सक से परामर्श शामिल है। इस कार्यक्रम का संयोजक अशोक दुआ और कुलभूषण आर्य को बनाया गया है।

महम में भाजपा की तिरंगा यात्रा आज शाम

महम। भारतीय जनता पार्टी द्वारा रविवार 10 अगस्त को महम में तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी। यात्रा के संयोजक अजीत अहलावत ने बताया कि तिरंगा यात्रा शाम को 3 बजे सैमाण चुंगी से शुरू होगी। उसके बाद चौबीसी मेन बाजार से होती हुई चौबीसी चबूतरे तक जाएगी। यहां पर भाजपा कार्यकर्ता शहीदों की याद में दीप प्रज्वलित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। तिरंगा यात्रा में राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा बतौर मुख्य अतिथि शामिल होंगे। जबकि जिला अध्यक्ष रणबीर ढाका, प्रभारी रमेश भाटिया, जिला कष्ट निवारण समिति सदस्य महंत सतीश दास समेत पार्टी के कई पदाधिकारी व कार्यकर्ता यात्रा में शामिल होंगे।

जिला बार एसो. के प्रधान ने डीजीपी से मुलाकात की

रोहतक। जिला बार एसोसिएशन के (प्रधान) दीपक हुड्डा अधिवक्ता ने (जनरल सेक्रेटरी) राजकरण पंघाल अधिवक्ता, (एनरोलमेंट कमेटी के चेयरमैन) सुरेंद्र लौरा अधिवक्ता एवं विपिन डागर अधिवक्ता के साथ चंडीगढ़ के नवनियुक्त डीजीपी सागरप्रीत हुड्डा से मुलाकात की।जिला बार एसोसिएशन के प्रधान दीपक हुड्डा ने मुलाकात करते हुए कहा कि पूरे हरियाणा के लिए विशेष तौर पर हमारे रोहतक जिले के लिए गौरव की बात है कि रोहतक जिले में जन्मे सागरप्रीत हुड्डा चंडीगढ़ के डीजीपी नियुक्त हुए हैं। जिला बार एसोसिएशन रोहतक के प्रधान दीपक हुड्डा ने डीजीपी सागरप्रीत हुड्डा को जिला बार एसोसिएशन रोहतक में आने का निमंत्रण दिया। जिसे उन्होंने स्वीकारते हुए कहा जल्द ही वे रोहतक जिला बार एसोसिएशन में आएंगे।

11 को होगी परिवेदना समिति की बैठक

रोहतक। उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि 11 अगस्त को प्रदेश के विकास एवं पंचायत, खान एवं भूविज्ञान मंत्री कृष्ण लाल पंवार की अध्यक्षता में जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की मासिक बैठक का आयोजन किया जाएगा। इस बैठक का आयोजन स्थानीय जिला विकास भवन स्थित डीआरडीए सभागार में 11 अगस्त को दोपहर बाद 3 बजे होगा। विकास एवं पंचायत मंत्री मासिक बैठक के एजेंडे में शामिल शिकायतों की सुनवाई करके मौके पर उपस्थित संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देंगे। सभी संबंधित अधिकारी इस बैठक में उपस्थिति सुनिश्चित करेंगे।

आरकेवीवाई स्कीम के लिए 20 तक आवेदन

रोहतक। उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा आरकेवीवाई योजना के घटक फसल अवशेष प्रबंधन 2025-26 के तहत व्यक्तिगत श्रेणी के अंतर्गत विभिन्न कृषि यंत्रों पर अधिकतम 50 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। इस स्कीम के तहत विभाग के पोर्टल पर आवेदन करने की अंतिम तिथि 20 अगस्त है। धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि व्यक्तिगत श्रेणी के किसान का चयन एक परिवार पहचान पत्र में से केवल एक ही किसान का किया जाएगा।

बस स्टैंड पर भारी भीड़ के कारण बसों में बैठने के लिए करना पड़ा इंतजार

•

कई जगह प्राइवेट बसों की शिकायतें मिली

रक्षाबंधन पर बहनों के लिए चली 182 बसे आरटीए की टीम ने रखी पूरी निगरानी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

रक्षाबंधन के पर्व पर शुक्रवार को महिलाओं के लिए सरकार की ओर से चलाई गई निःशुल्क बस सेवा का कई महिलाओं ने लाभ उठाया। हरियाणा सरकार द्वारा यह विशेष सुविधा बहनों को अपने भाइयों के पास पहुंचने और त्यौहार को मनाने के उद्देश्य से दी जाती है। सुबह से ही जिला और आस-पास के इलाकों से महिलाओं की बस स्टैंड पर आवाजाही बढ़ गई थी। हालांकि, इस बार मौसम ने भी अपनी भूमिका निभाई। वहीं आरटीए विभाग की टीम ने आरटीए सचिव विरेंद्र ढुल के नेतृत्व में अपना चैकिंग अभियान भी चलाया।

रोडवेज डिपो की तरफ से 182 बसों को अलग अलग रूटों पर लगाया गया ताकि महिलाओं को सफर में किसी परेशानी का सामना न करना पड़े। हालांकि कई जगह प्राइवेट बस चालकों की वजह से यात्री परेशान नजर आए। कई प्राइवेट बसें बस स्टैंड पर ही खड़ी रही। बता दें कि सुबह और दोपहर के समय हुई तेज बारिश के कारण कई महिलाओं को असुविधा का सामना करना पड़ा। पानी से भीगी सड़कों और जगह-जगह बने जलभराव के कारण कई महिलाओं ने निजी वाहनों या रिश्तेदारों के साधनों से यात्रा करना अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक समझा। कई रूटों पर बारिश के कारण बसों के समय पर पहुंचने में भी थोड़ी देर हुई, लेकिन प्रशासन ने इसे नियंत्रित करने के लिए पूरी कोशिश की।

बसों में चढ़ने के लिए मारामारी

महिलाओं की भारी भीड़

बहनों ने जेल में भाइयों को बांधी राखी

जेल में बंद कैदी और हवालातियों ने भी रक्षा बंधन का त्यौहार मनाया। सुबह से शाम तक बहनें जेल परिसर में पहुंची और जेल में बंद अपने भाईयों की कलाई पर राखी बांधी। इस दौरान बहनें और भाई काफी भावुक नजर आए।

विशेष चेकिंग टीम तैनात रही

रक्षाबंधन के दिन बस सेवा की सुचारू व्यवस्था बनाए रखने के लिए क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण, रोहतक के सचिव वीरेंद्र सिंह ढुल की अध्यक्षता में एक विशेष चेकिंग टीम तैनात रही। टीम में सहायक सचिव मुनीश मदान, परिवहन निरीक्षक जसवीर नरवाल और उप परिवहन निरीक्षक संदीप गुलिया शामिल रहे। इस टीम ने दिनभर बस स्टैंड रोहतक में निजी और परिवहन समिति की बसों का समय-समय पर निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने यात्रियों से सीधे बातचीत भी की और उनकी समस्याओं को सुना। अधिकांश यात्रियों ने बताया कि उन्हें यात्रा के दौरान किसी प्रकार की बड़ी असुविधा नहीं हुई और बसें समय पर चल रही थीं।

कई रूटों पर भारी भीड़

कुछ रूटों पर भीड़, यात्रियों को इंतजार त्योहार के दिन होने के कारण कुछ प्रमुख रूटों जैसे दिल्ली, पानीपत, हिसार और झज्जर जाने वाली बसों पर यात्रियों की भीड़ ज्यादा रही। कई बार एक ही रूट पर सवारियों की संख्या अधिक होने से महिलाओं और अन्य यात्रियों को अगली बस का इंतजार करना पड़ा। भीड़ को देखते हुए परिवहन विभाग ने कुछ अतिरिक्त बसें भी चलाईं, ताकि लोगों को समय पर उनके गंतव्य तक पहुंचाया जा सके।

बारिश बनी बड़ी चुनौती

बारिश ने दिनभर यात्रियों और प्रशासन दोनों के लिए चुनौतियां खड़ी कीं। कई जगहों पर पानी भर जाने से बसों को रूट बदलकर ले जाना पड़ा, जिससे यात्रा समय बढ़ गया। शहर के मुख्य चौक-चौराहों पर भी ट्रैफिक जाम की स्थिति बनी रही, खासकर झज्जर रोड, दिल्ली रोड और बस स्टैंड के आसपास। जाम के कारण कई बसें और निजी वाहन फंस गए, जिससे यात्रियों को परेशानी हुई।महिलाओं ने बताया कि बारिश के कारण बस स्टैंड पर चढ़ने-उतरने में भी मुश्किल हुई, खासकर उन यात्रियों को जो छोटे बच्चों के साथ यात्रा कर रही थीं।

रोहतक। निजी व परिवहन समिति बसें का निरीक्षण करते आरटीए अधिकारी।

सांपला: रक्षाबंधन पर बसों में रही भीड़

सांपला। भाई -बहन के प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन का त्योहार इलाके में धूमधाम से मनाया गया। बहनों ने भाइयों को तिलक करके मिठाई खिलाई और उनकी कलाई पर राखी बांधी भाइयों ने बहनों की रक्षा का संकल्प लिया। त्योहार को लेकर बाजार में भी काफी भीड़ रही है मिठाइयां और फलों की सबसे ज्यादा बिक्री हुई। बहुत सी महिलाओं ने रोडवेज की मुफ्त यात्रा का भी फायदा उठाया। प्राइवेट वाहनों में भी यात्रियों की भीड़ रही।

रेलगाड़ियां भी रही फुल

रक्षा बंधन को देखते हुए रेल गाड़ियों में भी महिला यात्रियों की भीड़ देखने को मिली। दिनभर महिलाएं रेलगाड़ियों में सफर करती रही। इसके अलावा कई जगह रेलवे स्टेशन पर भीड़ देखी गई। हालांकि यहां यात्रियों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं आई।

हजारों की संख्या में रोजाना गांव से निकलते हैं वाहन चालक, क्षेत्रवासियों ने की मांग

सुनारियां बेरी रोड टाइल्स से नहीं, कंक्रीट या तारकोल से बनाया जाए, लोक निर्माण विभाग के एसडीओ से मिले

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

वार्ड 20, 21 और 22 के नागरिकों ने शुक्रवार को सुनारियां बेरी रोड के निर्माण को लेकर प्रशासन के समक्ष ठोस मांग रखी। स्थानीय निवासियों ने स्पष्ट कहा कि यह सड़क टाइल्स से नहीं बल्कि पुराने और मजबूत तरीके कंक्रीट या तारकोल से बनाई जानी चाहिए। इस संबंध में नागरिकों के एक प्रतिनिधिमंडल ने समाजसेवी रिशी आर्य की अध्यक्षता में एसडीओ और कार्यकारी अभियंता से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल में वार्ड 22 की पार्षद संगीता सुनारिया, ठेकेदार अमित भारद्वाज करमबीर जांगड़ा, बिट्टू जांगड़ा समेत अन्य क्षेत्रवासी भी शामिल रहे। लगभग दो वर्ष पूर्व ही रिशी आर्य और संगीता सुनारिया ने इस विषय पर सीएम विंडो पर शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत के बाद भी लंबे समय तक कार्य में देरी होती रही और बीच में कई बार निर्माण का एस्टिमेट बदला गया। अब जब सड़क निर्माण की प्रक्रिया शुरू होने जा रही है, तो प्रशासन की ओर से टाइल्स लगाने का प्रस्ताव सामने आया है। इस प्रस्ताव का क्षेत्रवासियों ने एकजुट होकर विरोध किया है। सुनारियां बेरी रोड पिछले 40 वर्षों से कंक्रीट और तारकोल से बनी है, और इस तरह के निर्माण ने समय की कसौटी पर खुद को मजबूत साबित किया है।

अप्रूवल के अनुसार काम कराएंगे

वहां के ग्रामीणों ने इस बारे में मुलाकात की है, लेकिन उपर से जो अप्रूवल आई हुई है हमें तो उसी पर काम करना है। इसके समाधान के लिए ऊपर से ही कोई गाइडलाइन मिले तो तभी समाधान हो सकता है। हम अपनी मर्जी से इसमें कोई बदलाव नहीं कर सकते है। अगर उपर से कोई बदलाव होता है तो उस हिसाब से हम अपना कार्य कर सकते है। -**मुनीष मल्होत्रा**, एसडीओ, लोक निर्माण विभाग

ट्रैफिक दबाव नहीं झेल पाएंगी टाइलें

टाइल्स कमजोर होती हैं, भारी ट्रैफिक का दबाव नहीं झेल पातीं और जल्दी टूट-फूट जाती हैं। इससे न केवल बार-बार मरम्मत का खर्च बढ़ेगा, बल्कि सड़क की गुणवत्ता भी घटेगी और आसपास की प्रॉपर्टी वैल्यू पर नकारात्मक असर पड़ेगा। रिशी आर्य ने यह भी स्पष्ट किया कि प्रशासन को सड़क के दीर्घकालिक उपयोग और टिकाऊपन को प्राथमिकता देनी चाहिए, न कि सिर्फ़ तात्कालिक निर्माण पर ध्यान देना चाहिए।

जनता की भावनाओं का सम्मान जरूरी

वार्ड 22 की पार्षद संगीता सुनारिया ने कहा कि यह सड़क सिर्फ़ एक रास्ता नहीं, बल्कि वार्ड 20, 21 और 22 के हजारों लोगों के आवागमन की जीवनरेखा है। रोजाना यहां से भारी वाहनों, स्कूल बसों, ऑटो और पैदल यात्रियों की आवाजाही होती है। ऐसे में प्रशासन को जनता की भावनाओं और क्षेत्र की वास्तविक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेना चाहिए।

पीक आवर्स में भारी भीड़ रहती

स्थानीय लोगों के अनुसार, सुनारियां बेरी रोड पर रोजाना सुबह-शाम पीक आवर्स में भारी भीड़ रहती है। यह सड़क न केवल वार्ड के अंदरूनी हिस्सों को जोड़ती है, बल्कि मुख्य शहर से गांवों और औद्योगिक क्षेत्रों तक जाने का अहम मार्ग भी है। पिछले कई वर्षों में इस सड़क की सतह जगह-जगह से टूट चुकी है और गड्ढे बन गए हैं। बरसात के मौसम में पानी भर जाने से स्थिति और बिगड़ जाती है।

पुराने तरीके से निर्माण की मांग

निवासियों का कहना है कि तारकोल और कंक्रीट का मिश्रण सड़क को अधिक मजबूती देता है और इसका जीवनकाल भी लंबा होता है। वहीं, टाइल्स वाली सड़क पर भारी ट्रक और बसें गुजरते ही कंपन और दबाव से टाइल्स उखड़ने लगती हैं, जिससे सड़क जल्द खराब हो जाती है। इसके अलावा, मरम्मत में समय और धन दोनों की बर्बादी होती है।

मकान से 300 से अधिक शराब की बोतल बरामद

रोहतक। अवैध शराब बेचने की सूचना पर पुलिस ने गांधी कैंप स्थित मकान में छापेमारी की। यहां 300 से अधिक शराब की बोतलों को बरामद किया गया। पुलिस ने मामले में मकान मालिक के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस को सूचना मिली कि धीरज गुलाटी निवासी गांधी कैंप अपने मकान से अवैध शराब बेचने का काम करता है, जिसके पास कोई परमिट या लाइसेंस भी नहीं है। पुलिस ने तुरंत आबकारी विभाग के साथ मिलकर छापेमारी की और मकान के अंदर से शराब की बोतलों को बरामद किया। पुलिस ने शराब को जब्त करते हुए जांच शुरू कर दी।

महम। कुश्ती चैंपियनशिप का शुभारंभ करते अर्जुन अवार्डी दीपक हुड्डा व अन्य।

55 किग्रा भार वर्ग कुश्ती में निशा विजेता

महम। फरमाणा गांव में अंडर 23 आयुवर्ग की कुश्ती चैंपियनशिप आयोजित की गई। हरियाणा कुश्ती संघ द्वारा आयोजित यह फ्री स्टाइल ग्रीक रोमन और महिला हरियाणा स्टेट कुश्ती चैम्पियनशिप थी। खेलों में कुश्ती संघ के अध्यक्ष रमेश बोहर व अर्जुन अवार्डी दीपक हुड्डा और चैयरमेन देवेंद्र शर्मा मुख्य अतिथि रहे। 50 किलोग्राम भारवर्ग में प्रथम हन्नी सोनीपत, द्वितीय स्नेहा सोनीपत और तीसरे स्थान पर प्रवीण हिसार व तन्नू सोनीपत रहे। 53 किलोग्राम के मुकाबलों में हंशीका हिसार प्रथम, सोनिया झज्जर द्वितीय, तमन्ना रोहतक व हिमांशी सोनीपत तीसरे स्थान पर रही। 55 किलोग्राम भारवर्ग में निशा रोहतक प्रथम, ज्योति हिसार द्वितीय व सोनिया जीन्द तीसरे स्थान पर रही। 57 किलोग्राम वर्ग में अंजलि रोहतक प्रथम, कोमल जीन्द द्वितीय, मंजू भिवानी व स्नेहा रोहतक तीसरे स्थान पर रही। 59 किलोग्राम में सारिका रोहतक प्रथम, सीटू झज्जर द्वितीय, हरशिता व प्रिया भिवानी तीसरे स्थान पर रही।

परीक्षा रोहतक, भिवानी व चरखी दादरी के जवानों ने कंप्यूटर पर दी परीक्षा

सिपाही से मुख्य सिपाही के पद पर पदोन्नति के लिए बी-1 परीक्षा में 79 क्वालीफाई

- आईजी रोहतक रेंज ने लिया परीक्षा केंद्र का जायजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

पुलिस विभाग में सिपाही से मुख्य सिपाही के पद पर पदोन्नत होने के लिए विभागीय परीक्षा बी-1 का आयोजन किया गया। बी-1 परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद जवानों को पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में परीक्षण दिया जाता है। परीक्षण उत्तीर्ण करने के बाद जवानो को मुख्य सिपाही के पद पर पदोन्नत किया जाता है। शनिवार को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की कंप्यूटर लेब में रेंज स्तरीय बी-1 परीक्षा का आयोजन किया गया है। परीक्षा में

जिला रोहतक, भिवानी व दादरी के जवानों ने भाग लिया है। आनलाईन परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले जवानों को परेड की परीक्षा से भी गुजरना होगा। सफल प्रतिभागियों का मेरिट के आधार पर चयन किया जाएगा। पुलिस महानिरीक्षक वाई पूर्ण कुमार ने बी-1 की ऑनलाइन परीक्षा के दौरान महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय स्थित कंप्यूटर लेब का दौरा किया तथा परीक्षा के प्रबंधों का जायजा लिया तथा अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। एसपी नरेन्द्र बिजारणिया ने भी परीक्षा केन्द्र का दौरा किया तथा प्रबंधों का जायजा लिया। परीक्षा को सुचारू व सुगम तरीके से पूर्ण करने के लिए अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। उन्होनें कड़ी मेहनत करते हुए परीक्षा को सफलतापूर्वक हल करने के गुरु मंत्र भी जवानों को दिए। बी-1 परीक्षा को सफल बनाने के लिए विशेषज्ञों की टीम बनाई गई। बी-1 परीक्षा कंप्यूटर पर ऑनलाइन एक विशेष सॉफ्टवेयर पर आयोजित की जाती है। जिसमें बहुविकल्पीय 140 प्रश्न आते हैं। परीक्षा मे पुरुष व महिला सिपाही दोनों शामिल हैं। प्रत्येक प्रश्न का एक अंक होता है तथा नेगेटिव मार्किंग भी है। परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए प्रतिभागी को 70 अंक लेने होते हैं। रोहतक पुलिस के 210 जवानों ने हिस्सा लिया है। जिनमें 79 जवान परीक्षा में उत्तीर्ण हुए है।

तय कर सही स्कीम में निवेश करने से मिलेगा फायदा | म्यूचुअल फंड और गोल्ड निवेश करके बड़ा फंड तैयार करें | अपनी पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें, विविधता रखें

प्लानिंग बनाकर करें निवेश, 10 साल में बन सकते हैं करोड़पति

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

जब भी बात करोड़पति बनने की आती है तो ऐसा लगता है कि यह बहुत मुश्किल है। काफी लोग एक लाख रुपये महीने की सैलरी होने के बावजूद एक करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा नहीं कर पाते हैं। हालांकि यह प्लानिंग के साथ निवेश किया जाए तो यह कुछ मुमकिन है। आप सही प्लानिंग के जरिए निवेश करके मात्र 10 साल में ही करोड़पति बन सकते हैं। अगर आपकी उम्र 35 साल है और आप अगले 10-12 सालों में 1 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहते हैं, तो ये जानकारी आपके लिए काफी अहम हो सकती है।

जानकारों के अनुसार म्यूचुअल फंड और गोल्ड आदि जगह निवेश करके बड़ा फंड तैयारी किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड का रिटर्न शेयर मार्केट के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। जानकारों के मुताबिक पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें। पोर्टफोलियो में विविधता होनी चाहिए। एक्सपर्ट के अनुसार करोड़पति बनने के लिए जल्द से जल्द निवेश शुरू कर देना चाहिए। अगर कोई शख्स 35 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है तो वह 10 से 12 साल में करोड़पति बन सकता है। हालांकि इस दौरान निवेश में रिस्क लेना भी जरूरी होगा। इसके लिए कुछ रिश्क लें और लंबी अवधि के निवेश का प्लान तैयार कर आगे बढ़ें। इससे आप आसानी से करोड़पति बना पाएंगे और अपने धन से भविष्य को सुरक्षित कर पाएंगे। एक्सपर्ट कहते हैं कि कम जोखिम वाले निवेश से बहुत ज्यादा रिटर्न की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, लार्जकैप स्कीम्स ने पिछले पांच सालों में 14.02% का रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आप कम जोखिम लेंगे, तो आपको रिटर्न भी थोड़ा कम मिलेगा।

कहां करें निवेश

आप अपने पैसे को अलग-अलग जगहों पर निवेश कर सकते हैं। जैसे कि 20% ग्रोथ वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% वैल्यू वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% कॉन्ट्रा फंड में, 20% ग्रोथ वाले मिडकैप फंड में और 20% ग्रोथ वाले स्मॉल कैप फंड में निवेश कर सकते हैं। इस तरह से निवेश करने से आप अलग-अलग मार्केट कैप और स्टाइल में निवेश कर पाएंगे। इससे आपके पैसे के डूबने का खतरा कम होगा और आपको अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

करोड़पति बनने के लिए कितना निवेश करें

अगर आप 10 साल में 12% सीएजीआर (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) के साथ 1 करोड़ रुपये का फंड तैयार करना चाहते हैं, तो आपको हर महीने 45,000 रुपये एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करनी होगी। वहीं, 12 साल में करोड़पति बनना चाहते हैं तो यह निवेश 35,000 रुपये महीने का होगा। हालांकि 10 से 12 साल बाद एक करोड़ रुपये की वैल्यू कम हो जाएगी। इसलिए एक्सपर्ट कहते हैं कि हर साल एसआईपी की रकम 5 से 10 फीसदी बढ़ाते जाएं।

गोल्ड कितना जरूरी

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

ऐसे करें निवेश की प्लानिंग

चरण 1 : वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण

1. **लक्ष्यों की पहचान:** अपने वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित करें, जैसे कि रिटायरमेंट के लिए बचत, बच्चों की शिक्षा, या घर खरीदना।
2. **लक्ष्यों की प्राथमिकता:** अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता दें और उनकी समय सीमा निर्धारित करें।

चरण 2 : जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन

1. **जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन:** अपनी जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन करें और यह निर्धारित करें कि आप कितना जोखिम उठाने को तैयार हैं।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 3 : निवेश विकल्पों का चयन

1. **निवेश विकल्पों की जानकारी:** विभिन्न निवेश विकल्पों की जानकारी प्राप्त करें, जैसे कि स्टॉक, म्यूचुअल फंड, ईटीएफ, और बॉन्ड।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** वित्तीय लक्ष्यों व जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 4 : निवेश योजना का निर्माण

1. **निवेश योजना का निर्माण:** अपने वित्तीय लक्ष्यों और निवेश विकल्पों के अनुसार योजना बनाएं।
2. **निवेश की राशि:** निवेश की राशि निर्धारित करें और नियमित निवेश करने का निर्णय लें।

चरण 5 : निवेश की निगरानी और समीक्षा

1. **निवेश की निगरानी:** अपने निवेश की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार बदलाव करें।
2. **निवेश की समीक्षा:** यह सुनिश्चित करें कि लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं।

अतिरिक्त सुझाव

1. **विविधीकरण :** अपने निवेश को विविध बनाएं और एक ही निवेश विकल्प में अधिक जोखिम न उठाएं।
2. **नियमित निवेश :** नियमित निवेश करने से आपके निवेश की राशि बढ़ सकती है।

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड

चढ़ते और गिरते दोनों शेयरों पर दांव लगाने का मौका

काम की बात
बिजनेस डेस्क

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) गिरते बाजार में भी पैसे कमाने का मौका देता है। लेकिन, यह फंड कमजोर दिल वाले इनवेस्टर्स के लिए नहीं है। हाल में सेबी ने एसआईएफ की नई कैटेगरी शुरू की थी। क्वांट इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट फंड (क्यूएसआईएफ) इस कैटेगरी का इंडिया का पहला फंड है। यह इनवेस्टमेंट के लिए हेज-फंड स्टाइल की स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। इसका मतलब है कि यह एक ही समय में लॉन्ग पोजीशन और शॉर्ट पोजीशन या इसके ऑपोजिट पोजीशन लेने की इजाजत देता है। यह म्यूचुअल फंड के फ्रेमवर्क के तहत आता है। इसका मतलब है कि इस पर रेगुलेटर की नजर रहती है। यह इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा का भी ध्यान रखता है। उतारचढ़ाव वाले बाजार में शॉर्टिंग से मुनाफा कमाने की गुंजाइश होती है। क्वांट म्यूचुअल फंड के फाउंडर और सीआईओ संदीप टंडन ने कहा, रअगर आपके पास स्ट्रॉन्ग रिसर्च है, अच्छा एनालिटिक्स है और सॉलिड माइक्रो व्यू है तो शॉर्टिंग से आप मार्केट में दोनों तरह की स्थितियों में पैसे कमा सकते हैं। आपको स्टॉक के चढ़ने का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। गिरते स्टॉक्स से मुनाफा कमाना सेबी के फ्रेमवर्क के तहत लीगल है। यह उन इनवेस्टर्स के लिए अहम टूल है जो इसके इस्तेमाल का तरीका जानते हैं।

यह किस स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है

यह फंड लॉन्ग-शॉर्ट स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। यह ऐसे स्टॉक्स को खरीदता है, जिनकी कीमतें चढ़ने की उम्मीद होती है और साथ ही उन स्टॉक्स को शॉर्ट करता है जिनकी कीमतें गिरने के आसार होते हैं। इस स्ट्रेटेजी की वजह से मार्केट किसी भी दिशा में जाए इनवेस्टर्स को मुनाफा होता है। गिरने वाले और चढ़ने वाले शेयरों की पहचान फंड मैनेजर करता है। इसके लिए फंडामेंटल और टेक्निकल एनालिसिस का इस्तेमाल होता है।

टैक्स के कौन से नियम लागू होते हैं

टैक्स के मामले में एसआईएफ पर म्यूचुअल फंड्स के नियम लागू होते हैं। इस वजह से यह एआईएफ या पीएमएस के मुकाबले ज्यादा फायदेमंद हो जाता है। सहजमनी के फाउंडर और चीफ इनवेस्टमेंट एडवाइजर अभिषेक कुमार ने कहा, क्यूएसआईएफ जैसे इक्विटी ओरिएंटेड एसआईएफ के शॉर्ट टर्म गेंस पर 20 फीसदी टैक्स लगता है, जबकि लॉन्ग टर्म गेंस पर 12.5 फीसदी टैक्स लगता है। एक वित्त वर्ष में 1.25 लाख रुपये का गेंस टैक्स-फ्री है।

न्यूनतम इनवेस्टमेंट कितना है

एसआईएफ में कम से कम 10 लाख रुपये का निवेश जरूरी है। यह पीएमएस में न्यूनतम 50 लाख रुपये और एआईएफ में न्यूनतम 1 करोड़ रुपये के निवश के मुकाबले कम है। सैंक्टम वेल्थ में इनवेस्टमेंट प्रोडक्ट्स के हेड अलख यादव ने कहा कि न्यूनतम निवेश कम होने से यह ज्यादा इनवेस्टर्स के दायरे में आ जाता है। इसके अलावा चूंकि यह सेबी के नियम और कानून के तहत ऑपरेट होता है, जिससे इस पर रेगुलेटर की नजर बनी रहती है। इससे इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा होती है।

क्या आपको इनवेस्ट करना चाहिए?

एसआईएफ का इस्तेमाल इनवेस्टर को अपने सैटेलाइट पोर्टफोलियो की तरह करना चाहिए न कि कोर पोर्टफोलियो के एक हिस्से के रूप में। अगर कोई स्मार्ट इवेस्टर रिस्क और रिटर्न को बैलेंस करना चाहता है तो वह कुछ पैसा एसआईएफ में लगा सकता है। अगर वह 50 रुपये म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहता है तो वह इसमें से 15 रुपये एसआईएफ में लगा सकता है। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में कुल निवेश का 30 फीसदी वह एसआईएफ में इनवेस्ट कर सकता है।

क्या है एसआईएफ

स्पेशलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) एक नया निवेश विकल्प है जो म्यूचुअल फंड और पोर्टफोलियो मैनेजमेंट सर्विस (पीएमएस) के बीच का ऑप्शन है। यह निवेशकों को अधिक जोखिम लेने और विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग करने की अनुमति देता है, जैसे कि लॉन्ग-शॉर्ट फंड। एसआईएफ में निवेश करने के लिए कम से कम 10 लाख की आवश्यकता होती है।

एसआईएफ की विशेषताएं

- लॉन्ग-शॉर्ट फंड : एसआईएफ में निवेशक दोनों तरह के स्टॉक खरीद और बेच सकते हैं, जिससे जोखिम कम करने और बेहतर लाभ पाने का मौका मिलता है।
- अधिक जोखिम : एसआईएफ में निवेश करने वाले निवेशकों को अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है, लेकिन इससे अधिक रिटर्न भी मिल सकता है।
- टैक्स लाभ : एसआईएफ में टैक्स की व्यवस्था म्यूचुअल फंड जैसी ही है, जो निवेशकों के लिए फायदेमंद हो सकती है।

एसआईएफ में निवेश करने के लाभ

- अधिक फ्लेक्सिबिलिटी : एसआईएफ में निवेशक विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं और अपने निवेश को अधिक फ्लेक्सिबल बना सकते हैं।
- अधिक रिटर्न : एसआईएफ में निवेश करने से अधिक रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है।

कौन से फंड कर रहे हैं हाउस एसआईएफ लॉन्च

- क्वांट म्यूचुअल फंड : क्वांट म्यूचुअल फंड ने भारत का पहला लॉन्ग-शॉर्ट एसआईएफ फंड लॉन्च करने की मंजूरी प्राप्त की है।
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल : आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल भी अपना एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।
- एसबीआई म्यूचुअल फंड : एसबीआई म्यूचुअल फंड भी एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।

- फाइनेंशियल सफलता की पहली सीढ़ी है खर्चों पर रोक लगाना और भविष्य के लिए आय का 20 फीसदी बचाना
- अपने मंथली बिलों व खर्चों को कम कर बचा सकते हैं पैसे
- अपने बचे हुए पैसे को सही जगह निवेश करें, बढ़ेगा पैसा

पैसों का करें बेहतर मैनेजमेंट, नहीं होंगे परेशान

सैलरी को 'दीमक' की तरह खा जाते हैं बिल

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

अक्सर लोगों को लगता है कि फाइनेंशियल रूप से मजबूत या फिर सफलता का मतलब बहुत ज्यादा पैसा कमाना है, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं होता है। असल में फाइनेंशियल सफलता की पहली और सबसे अहम सीढ़ी है अपने खर्चों पर रोक लगाना। जब आप अपने मंथली बिलों और खर्चों को कम करते हैं, तो फिर आपके पास बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए अधिक पैसा बचता है। तभी आप अपने पैसे को बढ़ा पाते हैं। असल में यह कोई मुश्किल काम नहीं है, जी हां कुछ आसान और सुनियोजित कदम उठाकर आप अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं और एक मजबूत वित्तीय फ्यूचर की नींव रख सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ टिप्स जो अपको आर्थिक सफलता की ओर ले जाएंगे।

पहला कदम : अपने खर्चों को पहचानें

सबसे पहले, आपको यह जानना होगा कि आपकी मेहनत की कमाई का पैसा कहां जा रहा है। इसके लिए, आप कम से कम एक महीने तक अपने हर छोटे-बड़े खर्च का हिसाब रखें। अपने सभी खर्चों को एक कॉपी में या मोबाइल ऐप में लिखें। इसमें किराए, किराने का सामान, ईएमआई, बिजली बिल से लेकर एक कप चाय का खर्च भी शामिल करें। यह कदम आपको यह समझने में हेल्प कर सकता है कि आप कहां-कहां फिजूलखर्ची कर रहे हैं।

दूसरा कदम बजट बनाएं

एक बात साफ है कि जब आप अपने खर्चों को पहचान लेंगे, तो अगला कदम होगा एक मासिक बजट बनाना है। अपनी इनकम के हिसाब से हर चीज के लिए एक लिमिट तय करें. बजट बनाने से आपको अपने खर्चों को कंट्रोल करने में मदद मिल सकेगी। अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें।

अहम खर्चे : किराया, ईएमआई, राशन, दवाई आदि।

गैर-जरूरी खर्चे : बाहर खाना, ऑनलाइन शॉपिंग, मनोरंजन आदि।

तीसरा कदम : गैर-जरूरी खर्चों में कटौती

अधिक पैसा बचाने के लिए अपने गैर-जरूरी खर्चों में कटौती करें। इससे आपको हर महीने पैसे बचने लगेंगे। इस पैसे को आप अच्छी जगह पर निवेश करें। धीरे धीरे इस निवेश औश्र अचत को बढ़ाते जाएंग। इससे आपके हाथों में अधिक पैसा आएगा और आपकी बचत बढ़ती जाएगी। आप इन खर्चों में कर सकते हैं कटौती।

मनोरंजन : कई ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के सब्सक्रिप्शन लेने के बजाय, केवल एक या दो का ही यूज करें।

खान-पान : बाहर से खाना ऑर्डर करने की जगह, घर पर खाना बनाने की आदत डालें। इससे आपके पैसे और हेल्थ दोनों बचेंगे।

शॉपिंग : अनावश्यक और आवेगपूर्ण खरीदारी से बचें। जब कोई चीज जरूरी हो तभी खरीदें।

चौथा कदम : बड़े बिलों को कम करें

आपको अपनी बचत बढ़ाने के लिए अपने सबसे बड़े मासिक बिलों को कम करने के तरीके खोजने होंगे या कमाई को बढ़ाना होगा। कोई भी पार्टटाइम काम करें। फीलॉन्सिंग भी कर सकते हैं। इससे आपको पैसे बचेंगे। बिजली का बिल ज्यादा है। गैर जरूरी उपकरणों को बंद कर दें। घर लाइट उतनी ही जलाएं, जितनी जरूरत हो। कुछ बिलों में ऐसे कर सकते हैं कटौती।

बिजली बिल : घर में एलईडी लाइट का यूज करें, पुराने और ज्यादा बिजली खाने वाले उपकरणों को बदलें और जरूरत न होने पर पंखे, एसी और लाइट बंद करें।

फोन और इंटरनेट : अपने फोन और इंटरनेट प्लान की तुलना करें। कई बार, कंपनियां बेहतर ऑफर दे रही होती हैं, जिनसे आपका बिल कम हो सकता है।

लोन की ईएमआई : अगर आपके पास पुराना लोन है, तो उसकी ब्याज दर को कम करने के लिए बैंकों से बात करें।

पांचवां कदम : बचत को प्राथमिकता दें

अपने मंथली खर्चों को कम करने के बाद, जो भी पैसा बचे उसे तुरंत बचत और इन्वेस्टमेंट में लगाएं। 'खुद को पहले भुगतान करें' के रूल को अपनाएं। इसका मतलब है कि सैलरी आने पर सबसे पहले बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए पैसा निकालें, फिर बाकी बचे पैसों से खर्च करें। इससे साफ है कि मंथली बिलों को कम करना एक आदत है, जिसे लगातार कोशिश से अपनाया जा सकता है। यह कोई बड़ा काम नहीं होता है, बल्कि छोटे-छोटे कदमों का एक बड़ा रूप होता है। इन कुछ कदमों को उठाकर आप ना केवल अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्यों को भी हासिल कर सकते हैं और एक सेफ फ्यूचर की नींव रख सकते हैं।

स्टूडेंट लाइफ में फाइनेंशियल मैनेजमेंट घटा सकता है परेशानी, बजट बनाकर फ्यूचर प्लानिंग भी छात्रों के लिए बेहतर

इन्हें अपनाने से कम पैसों में भी जी सकते हैं बॉस वाली जिंदगी

स्टूडेंट लाइफ में करें मनी मैनेजमेंट,भविष्य में धन की नहीं रहेगी कमी, अमीर बनने के लिए हर छात्र कुछ अहम टिप्स को अपनाएं

प्लानिंग
बिजनेस डेस्क

स्टूडेंट लाइफ में सेविंग्स की आदत डालना फ्यूचर के लिए सबसे मजबूत नींव हो सकती है। सेविंग्स को कमी भी जो बचेगा, वही बचाऊंगा की सोच से ना देखें, बल्कि इसे अपनी प्रायोरिटी बनाएं। छोटे-बड़े बचत लक्ष्य तय करें। जब कोई टारगेट तय होता है तो बचत करना आसान और प्रेरणादायक लगता है। हमेशा ट्राई करें कि आपकी आय का 10% या 20% हिस्सा सीधे बचत खाते में डालें।

विद्यार्थी लाइफ अक्सर उत्साह, सीखने और नए अनुभवों से भरा होती है, लेकिन इसी दौरान पैसों का मैनेजमेंट बहुत बड़ी चुनौती भी साबित हो सकता है। कॉलेज की फीस, किताबों का खर्च, हॉस्टल का किराया, खाना-पीना, और मनोरंजन के खर्चे इन सभी को मैनेज करना कभी बार मुश्किल हो जाता है, लेकिन अगर स्टूडेंट टाइम में ही बजट बनाना और पैसों का सही मैनेजमेंट सीख लिया जाए तो फ्यूचर आर्थिक परेशानियों से बच सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि छात्रों को शुरू से ही मनी मैनेजमेंट पर ध्यान देना चाहिए ताकि भविष्य की दिक्कतों से दूर रहा जा सके और छात्र आसानी से धनवान बन सकें। अच्छी फाइनेंशियल आदतें न केवल आपको कर्ज के जाल में फंसने से बचाती हैं, बल्कि आपको अपने टारगेट को प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपको धनवान बना सकते हैं।

अपनी इनकम को ट्रैक करें

हर छात्र को अपने फाइनेंशियल लाइफ की शुरुआत सबसे पहले अपनी इनकम और खर्चों को ट्रैक करना चाहिए। चाहे पॉकेट मनी हो, स्कॉलरशिप या पार्ट-टाइम जॉब की आमदनी हो, सबका हिसाब रखना जरूरी होता है। इसके लिए आप एक छोटी डायरी, कोई बजटिंग ऐप या एक्सेल शीट का सहारा ले सकते हैं। स्टूडेंट रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्च जैसे स्नैक्स, ऑटो किराया या ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन को भी मेंशन करें। यह आदत आपको अपनी फिजूलखर्ची समझने और उसे नियंत्रित करने में मदद करेगी, जिससे पैसों की बचत हो सकेगी।

आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझें

अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें-स्टूडेंट लाइफ में आर्थिक समझ को समझना बेहद जरूरी है, और इसकी शुरुआत होती है 'आवश्यकताओं' और 'इच्छाओं' के फर्क को समझने से। आवश्यकताएं वो खर्चे होते हैं जो लाइफ के लिए जरूरी हैं-जैसे ट्यूशन फीस, किताबें, रूम रेंट, खाना और आना-जाना, जबकि, इच्छाएं वो चीजें हैं जो केवल सुख-सुविधा के लिए होती हैं, जैसे बाहर खाना, फिल्म देखना या नया गैजेट खरीदना, तो जब आप इन दोनों के बीच फर्क पहचान लेंगे, तो आप अपनी जरूरत पर फोकस करके जरूरी खर्चों पर लगाम लगाकर बेहतर फाइनेंशियल कंट्रोल बना सकते हैं।

50/30/20 का बजट बनाएं

अपनी इनकम और खर्चों को समझने के बाद अगला जरूरी कदम है एक सही मंथली बजट बनाया जाए। आप अपनी मासिक आय के अनुसार भोजन, कन्वेंशन, पढ़ाई की चीजें और मनोरंजन जैसी लिस्ट के लिए अलग-अलग पैसे तय करें। यह ध्यान रखें कि आपके कुल खर्च आपकी कुल आमदनी से अधिक ना हों। बजट बनाने के लिए आप 50/30/20 रूल का पालन कर सकते हैं, जैसे 50% राशि आवश्यकताओं पर, 30% इच्छाओं पर और 20% सेविंग्स या किसी भी लोन की चुकौती के लिए रखें।

स्मार्ट खरीदारी करें और रियायतों का लाभ उठाएं

पैसों की बचत के लिए रियायतों और डील्स का समझदारी से यूज करना बेहद फायदेमंद हो सकता है। जहां तक हो हमेशा अपने स्टूडेंट आईडी कार्ड को साथ रखें और **wherever possible** उसे दिखाकर छूट पाने की कोशिश कर सकते हैं। आप किराने का सामान थोक में खरीदें और ऑफर्स या सेल पर नजर रखना चाहिए, इतना ही नहीं महंगे ब्रांड्स की बजाय सामान्य ब्रांड चुनना अधिक बजट-फ्रेंडली होता है।

एक्स्ट्रा इनकम के ऑप्शन खोजें

अगर आपका बजट लिमिटेड है तो खर्चों पर नियंत्रण के साथ-साथ इनकम बढ़ाने के ऑप्शन ढूंढें। आप पार्ट-टाइम जॉब जैसे ट्यूटरिंग, कैंपस असिस्टेंटशिप या फ्रीलांसिंग का ऑप्शन चुन सकते हैं। साथ ही आपकी हॉबी भी कमाई का जरिया बन सकती है—जैसे ऑनलाइन कंटेंट बनाना, हैंडमेड क्राफ्ट्स बेचना या ब्लॉगिंग करना।

इमरजेंसी फंड बनाएं

अचानक आने वाले खर्चों के लिए हमेशा तैयार रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि मेडिकल इमरजेंसी, लैपटॉप खराब होना या कोई भी अचानक से कोई भी खर्चे सामने आ सकते हैं। इसके लिए आप एक अलग बचत खाता खोलकर उसमें धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी राशि जमा करें। ऐसा करने से आपको महंगे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। छात्र बजट बनाना, खर्चों की प्राथमिकता तय करना और हर महीने की सेविंग्स तय करना सीखकर फाइनेंशियल मैनेजमेंट की शुरुआत कर सकते हैं।

खबर संक्षेप

महम। तालाब किनारे बीज बोते आदर्श स्कूल मदीना के विद्यार्थी।

बच्चों ने तालाबों व रास्तों के किनारे बोए पेड़ों के बीज

महम। आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल मदीना की ओर से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए सीड बॉल गतिविधि का आयोजन किया गया। इस अभियान के तहत इस स्कूल के छात्र छात्राओं ने तालाबों, नहरों, रजवाहों और रास्तों के किनारों पर पेड़ पौधों के बीज बोए। प्रिंसिपल मंजुलता ने बताया कि इस अभियान का देश्य अधिक से अधिक हरियाली फैलाना और प्रकृति के प्रति लोगों का जागरूक करना था। इस कार्यक्रम की शुरुआत मदीना गिधंराण की सरपंच अंजु शर्मा के पति राजा शर्मा ने किया। मदीना कोरसान पंचायत की ओर से पंचायत प्रतिनिधि संदीप कुमार ने भी इस प्रयास का समर्थन करते हुए पर्यावरण सरंक्षण की दिशा में इसे एक सराहनीय पहल बताया। गतिविधि के अंतर्गत छात्रों ने अपने हाथों से बीजों को मिट्टी और खाद में लपेटकर 'सीड बॉल्स' तैयार किए और उन्हें गाँव के विभिन्न प्राकृतिक क्षेत्रों में फेंकते हुए भविष्य में हरियाली बढ़ाने का संकल्प लिया।

ठेकेदार ने टेंडर में बड़े लेवल पर घपला किया

राज्यसभा सांसद ने महम नपा के विकास कार्यों की विजिलेंस जांच की मांग की

मनोहर लाल जब प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, तब महम में करोड़ों रुपये के विकास कार्य करवाने के लिए सरकार ने ग्रांट दी थी।

हरिभूमि न्यूज ⏭महम

राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने महम नगर पालिका द्वारा करवाए गए तालाबों के सौंदर्यीकरण कार्य की विजिलेंस इनक्वायरी करने की मांग की है। शनिवार को काठमंडी स्थित अपने आवास पर पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल जब प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, तब महम में करोड़ों रुपये के विकास कार्य करवाने के लिए सरकार ने ग्रांट दी थी। इस ग्रांट से तालाबों का सौंदर्यीकरण किया जाना था। तालाबों का सौंदर्यीकरण नहीं हो पाया। तालाबों के किनारे खड़ी कंकरीट की दीवारें, सड़ता हुआ तालाबों का पानी और गंदे नालों के हालात घपले की

कहानी बयां कर रहे हैं। यदि यह पैसा ठीक से खर्च होता तो शहर में गंदगी नहीं होती।

इस मामले की जांच के लिए उन्होंने प्रदेश सरकार को लिखा था, लेकिन पता नहीं वह जांच क्यों नहीं हो पाई। वे फिर से इस मामले की जांच के लिए सरकार को पत्र लिखेंगे। इस मामले की विजिलेंस इन्क्वायरी होनी चाहिए। ठेकेदार ने इस टेंडर में बड़े लेवल पर घपला किया है। साथ ही राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने यह भी कहा कि अब भी महम शहर की पेयजल समस्या को दूर करने के लिए करोड़ों रुपए का टेंडर जनस्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी किया जाना था, लेकिन मिलीभगत करके इस टेंडर को रोक दिया गया है। इस टेंडर को रुकवाने के लिए नगर पार्षदों के फर्जी साइन किए गए हैं। वे सरकार को पत्र लिखकर इस बात की भी जांच की भी मांग करेंगे कि इसके पीछे क्या साजिश है। साजिशकर्ता का पता लगाया जाए। पार्षदों के हस्ताक्षरों की जांच की जाए। जनता के सामने सच्चाई सामने लाकर दोषी पाए जाने वाले व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के खिलाफ केस दर्ज किया जाना चाहिए।

राज्यपाल सत्यपाल मलिक को राजकीय सम्मान मिलना चाहिए थाः चौबीसी खाप

हरिभूमि न्यूज ⏭महम

चौबीसी सर्वखाप पंचायत ने पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक के निधन पर शोक जताया है और खाप पदाधिकारियों ने कहा है कि उनको राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी जानी चाहिए थी। राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार न किया जाना सरकार की दुर्भावना को दर्शाता है। सरकार उनको एक तिरंगा तक उपलब्ध नहीं करवा पाई। कोई विधायक, मंत्री, सांसद तक सत्यपाल मलिक के अंतिम दाह संस्कार में नहीं पहुंचा। क्या कोई सरकार, विधायक सांसद मंत्री इतने भी निर्दयी हो सकते हैं। चौबीसी सर्वखाप पंचायत के प्रधान सुभाष नंबरदार ने कहा कि सरकार किसी पार्टी की नहीं होती बल्कि पूरे देश की होती है। वे सरकार की घोर निंदा करते हैं। जम्मू कश्मीर से धारा 370 को लेकर भाजपा जो अपनी पीठ थपथपा रही है। उस

महम। बैठक में भाग लेते चौबीसी सर्वखाप पंचायत के पदाधिकारी।

अनुच्छेद 370 को खत्म करने वाले भी सत्यपाल मलिक थे। महासचिव मास्टर रामफल राठी ने बताया कि सत्ता में रहते हुए सत्यपाल मलिक ने किसान आंदोलन को समर्थन दिया। महम तपा प्रधान महाबीर गोयत ने कहा कि सत्यपाल मलिक राजकीय सम्मान के हकदार थे। उन्हें यह सम्मान मिलना चाहिए था। सत्यपाल मलिक जननेता बन चुके थे।

राजकीय मॉडल आईटीआई में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय शिक्षुता मेला कल

हरिभूमि न्यूज ⏭रोहतक

राजकीय मॉडल आईटीआई रोहतक में कल यानी सोमवार को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय शिक्षुता मेले का आयोजन किया जाएगा। महानिदेशक कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग के निर्देशानुसार 11 अगस्त को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय शिक्षुता मेले का आयोजन आईटीआई रोहतक सैनिक परिवार भवन नजदीक तहसील कांप्लेक्स रोहतक में किया जा रहा है, जिसमें जिले की लगभग 65 प्रतिष्ठित कंपनियां भाग ले रही हैं। मेले में लगभग 500 आईटीआई डिप्लोमा 12वीं पास एवं स्नातक पासआउट आवेदको को मौके पर

ही नियुक्तियां दी जाएंगी। मेले में भाग लेने वाली कंपनियों में मुख्य रूप से रोहतक क्षेत्र की प्रतिष्ठित कंपनियां रहेगी।

यह जानकारी राजकीय मॉडल आईटीआई के प्रधानाचार्य राजपाल सिंधु एवं सोनम गोयल मंडल रोजगार अधिकारी द्वारा दी गई। इसके अतिरिक्त भी संस्थान में प्रत्येक मास में लगभग दो रोजगार मेलों का आयोजन किया जाता है, जिससे विगत दिनों में 2000 से अधिक बेरोजगार युवक-युवतियां लाभान्वित हो चुके हैं। उन्होंने 11 अगस्त 2025 को आयोजित होने वाले रोजगार मेले में ज्यादा से ज्यादा बेरोजगार युवाओं व युवतियों को शामिल होने का आह्वान किया है।

महम। रक्षाबंधन के मौके पर प्रिंसिपल अशोक दांगी को राखी बांधती छात्राएं।

आर्य स्कूल मदीना ने धूमधाम से मनाया राखी का त्योहार

महम। आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मदीना में रक्षाबंधन के मौके पर राखी उत्सव मनाया गया। इस उत्सव में बच्चों ने रंग बिरंगी राखियां बनाई। छोटे बच्चों ने राखी से संबंधित सुंदर कार्ड बनाएं। पांचवी तक के बच्चों ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। प्राइमरी विभाग की विशेष प्रार्थना सभा हुई। इस सभा में बच्चों की सुंदर-सुंदर कविताएं सुनकर सभी का मन आनंदित हो गया। छोटे बच्चों ने विद्यालय के प्रधानाचार्य अशोक दांगी व प्रबंधक लतेश दांगी को अपने हाथों से बनाई हुई सुंदर-सुंदर राखियां बांधी। राखियां बंधवाते समय उन्होंने बच्चों को राखी के महत्व को समझाया। उन्होंने एक पौराणिक कथा भी सुनाई व बताया कि राखी एकमात्र धागा नहीं है यह प्रेम का वह बंधन है जो जन्मो जन्मो तक साथ चलता है। उपप्राचार्या नेहा चुघ ने सभी बच्चों को रक्षाबंधन की शुभकामनाएं दी।

रक्षाबंधन का त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया

रोहतक। द आर्यन ग्लोबल स्कूल में 8 अगस्त को रक्षाबंधन का त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर छात्रों और शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। छात्राओं ने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर उनकी सलामती और खुशहाली की कामना की और भाइयों ने अपनी बहनों को उपहार दिए और उनकी रक्षा करने का वचन दिया। स्कूल में, रक्षाबंधन के महत्व और भाई-बहन के प्रेम को दर्शाने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। जिसमें से कुछ छात्र-छात्राओं ने राखी बनाने की प्रतियोगिता में भाग लिया और अपनी कलात्मकता का प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों ने सलाद डेकोरेशन, अंब्रेला पेंटिंग, ग्रीटिंग कार्ड और बोंड विद नेचर पर अपने विचार व्यक्त कर अपना प्रेम प्रकट किया। बच्चों ने डीएसपी कार्यालय, पीटीसी सुनारिया में जाकर पुलिस अधीक्षक सहित अन्य अधिकारियों को राखी बांधी और पुलिस विभाग के प्रति अपना सम्मान और आभार व्यक्त किया। इसके अलावा, शिक्षकों ने रक्षाबंधन से संबंधित कहानियां सुनाईं और इस त्यौहार के महत्व पर प्रकाश डाला।कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को भारतीय संस्कृति और परंपराओं से परिचित कराना था। स्कूल की निदेशका नीता अहलावत तथा प्रधानाचार्य आर के खन्ना ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि रक्षाबंधन भाई-बहन के अटूट प्रेम और विश्वास का प्रतीक है। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया कि वे इस बंधन को हमेशा बनाए रखें और एक-दूसरे का सम्मान करें। यह कार्यक्रम छात्रों के बीच प्रेम, स्नेह और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने में सफल रहा। स्कूल में यह उत्सव छात्रों के लिए एक यादगार अनुभव रहा।

संस्कार वैली पब्लिक स्कूल पटवापुर में तीन दिवसीय ब्लॉक स्तरीय विद्यालय खेल प्रतियोगिता का समापन

रोहतक। 6 अगस्त से 8 अगस्त 2025 तक संस्कार वैली पब्लिक स्कूल, पटवापुर में तीन दिवसीय ब्लॉक स्तरीय विद्यालय खेल प्रतियोगिता का आयोजन उत्साह और गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में क्षेत्र के कई विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और अनुशासन, खेल भावना तथा बेहतरीन प्रदर्शन से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को अपनी खेल प्रतिभा दिखाने का अवसर देना, उन्हें प्रतियोगिता के माहौल से परिचित कराना और उनके भीतर नेतृत्व, सहयोग तथा अनुशासन जैसे गुणों को विकसित करना था। संस्कार वैली पब्लिक स्कूल के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विद्यालय को गौरव दिलाया। कबड्डी में अंडर-17 और अंडर-19 बालक वर्ग में टीमों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि अंडर-14 में द्वितीय स्थान मिला। खो-खो में अंडर-19 बालक और बालिका टीमों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।इन सफलताओं के पीछे विद्यालय के शारीरिक शिक्षकों जस्सू हुड्डा, अरुण, विकास, भगत सिंह और कृष्ण का मार्गदर्शन और मेहनत अहम रही। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला शिक्षा अधिकारी मंजीत मलिक और खंड शिक्षा अधिकारी सुनीता चहल उपस्थित रहीं। डीपीसी वीरेन्द्र हुड्डा ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। अतिथियों का स्वागत स्काउट्स और गाइड्स द्वारा किया गया और विद्यालय के चेयरमैन सुभाष रूहील ने पुष्पगुच्छ और स्मृति चिन्ह देकर उनका सम्मान किया। प्रतियोगिता के सफल आयोजन में आयोजन समिति, शिक्षकगण और पूरे विद्यालय परिवार का योगदान सराहनीय रहा। यह प्रतियोगिता न केवल खेल का आयोजन था, बल्कि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, सहयोग और प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देने वाला अवसर भी साबित हुआ।

शिक्षा भारती स्कूल में हर्षोल्लास से मनाया गया रक्षाबंधन पर्व

रोहतक। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के तत्वाधान एवं हिंदू शिक्षा समिति द्वारा संरक्षित शिक्षा भारती वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गोहाना रोड के विद्यार्थियों ने रक्षाबंधन का पावन पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः काल मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन और मंत्रोच्चार के साथ हुआ। छात्राओं ने भाई-बहन के पवित्र प्रेम और विश्वास के प्रतीक रक्षाबंधन का महत्व प्रस्तुत किया। इसके अंतर्गत विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने पारंपरिक मूल्यों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति में भाईचारे, प्रेम और एकता के महत्व पर प्रकाश डाला गया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को बताया कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के रिश्ते तक सीमित नहीं, बल्कि यह सभी में आपसी सहयोग, सम्मान और स्नेह की भावना को प्रबल करता है। विद्यालय के प्रधानाचार्य जितेन्द्र कुमार ने अपने संबोधन में कहा रक्षाबंधन का पर्व हमें एक-दूसरे की सुरक्षा, सम्मान और सहायता का संदेश देता है। हमें इस अवसर पर न केवल अपने परिवार, बल्कि समाज के हर व्यक्ति के प्रति सदभाव और जिम्मेदारी निभानी चाहिए।उन्होंने यह भी बताया कि रक्षाबंधन का पर्व केवल राखी बांधने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक-दूसरे के प्रति विश्वास, सुरक्षा और सम्मान का वचन है। हमें इस अवसर पर संकल्प लेना चाहिए कि हम न केवल अपने परिवार, बल्कि समाज के हर जरूरतमंद के साथ खड़े रहेंगे। यह पर्व हमारी संस्कृति की गहराई और हमारे संबंधों की मधुरता का प्रतीक है। कार्यक्रम संयोजिका शिखा ने बताया कि रक्षाबंधन का यह आयोजन विद्यार्थियों में पारंपरिक संस्कार, आपसी भाईचारा और प्रेम की भावना जागृत करने के उद्देश्य से किया गया है। बच्चों ने अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता से इस कार्यक्रम को सफल बनाया। ऐसे आयोजनों से बच्चों में भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान और जुड़ाव की भावना मजबूत होती है। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ. आदित्य बत्रा, उपाध्यक्ष उद्योगपति करन विग, प्रबंधक राम चरण सिंगला, कोषाध्यक्ष एसके गुप्ता, कार्यकारिणी सदस्या बीना कौशिक एवं डॉ. दिनेश मदान ने कहा कि रक्षाबंधन जैसे त्योहार हमारी संस्कृति की पहचान हैं। यह हमें एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सम्मान और सहयोग की भावना सिखाते हैं। हम यह कामना करते हैं कि हमारे विद्यार्थी जीवन में हमेशा इन मूल्यों को अपनाकर समाज में उदाहरण प्रस्तुत करें।

संकट मोचन मंदिर में रक्षाबंधन पर्व पर गुरुजी ने भक्तों को राखी बांधकर दिया दीर्घायु का आशीर्वाद

हरिभूमि न्यूज ⏭रोहतक

माता दरवाजा स्थित संकट मोचन मंदिर में ब्रह्मलीन गुरुमां गायत्री के सानिध्य में शनिवार को आपसी प्रेम, भाईचारे, भाई-बहन के अटूट प्यार और रिश्ते का प्रतीक पर्व रक्षाबंधन धूमधाम और हर्षोल्लास से मना। साध्वी मानेश्वरी देवी ने श्रद्धा व भक्तिभाव से भक्तों की कलाई पर राखी बांधकर व तिलक लगाकर उनकी सुख-समृद्धि व दीर्घायु की शुभकामनायें की। भक्तों ने गुरुजी को माथा टेका और आशीर्वाद लिया। साध्वी ने बताया कि 95 साल बाद रक्षा बंधन पर दुर्लभ महासंयोग बना है। यह संयोग वर्ष 1930 के समान है । आसान शब्दों में कहें तो दिन, नक्षत्र, पूर्णिमा संयोग, राखी बाँधने का समय लगभग सामान है। लक्ष्मी नारायण जी की पूजा करने और राखी बाँधने से दोगुना फल मिला है। पंडित अशोक शर्मा ने प्रसाद वितरित किया। यह जानकारी सचिव गुलशन भाटिया ने दी

रोहतक। माता दरवाजा स्थित संकट मोचन मंदिर में भक्तजनों कों राखी बांधकर और माथे पर तिलक लगाकर आशीर्वाद देती साध्वी मानेश्वरी देवी। फोटो : हरिभूमि

रोहतक। बड़े भाई को राखी बांधकर तिलक लगाती बहन। फोटो : हरिभूमि

भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक है रक्षाबंधन पर्व : साध्वी मानेश्वरी देवी

साध्वी मानेश्वरी देवी ने बताया कि रक्षाबंधन जिसे राखी के नाम से भी जाना जाता है। यह भाई-बहन के प्रेम को समर्पित व भाई-बहन के बीच के बंधन का उत्सव वाला हिंदू त्योहार है, जो भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर उनकी सुरक्षा और कल्याण की कामना करती हैं व भाई-बहन के रिश्ते को मजबूत करता है। उन्होंने बताया कि सबसे पहली राखी इंद्राणी ने इंद्र को बांधी थी, और तभी से यह परंपरा चली आ रही है।

श्री कृष्ण ने की थी द्रौपदी की रक्षा : साध्वी

रक्षाबंधन पर्व की कथा सुनाते हुए साध्वी ने बताया कि द्रोपदी ने एक बार त्रेतायुग में भगवान श्री कृष्ण की उंगली में चोट लग जाने पर अपनी साड़ी से टुकड़ा फाड़कर उनकी उंगली पर बांधा था। उसी चीर बांधने के कारण श्री कृष्ण ने चीरहरण के समय द्रौपदी की रक्षा की थी।

रोहतक। गोकर्ण पीठाधीश्वर स्वामी कपिलपुरी महाराज को राखी बांधतें भक्तजन व आर्य नगर में अपने भाई को राखी बांधती बहनें। फोटो : हरिभूमि

राखी का त्यौहार मनाया

रोहतक। माता धनपति देवी चैरिटेबल ट्रस्ट में निशुल्क पढ़ रहे 300 छात्र-छात्राओं ने राखी का त्यौहार सामूहिक रूप में बड़ी धूमधाम से मनाया। । मीडिया प्रभारी राजीव जैन ने बताया ट्रस्ट की सभी छात्राओं ने छात्रों को राखी बांधी व छात्रों ने उनकी रक्षा करने का वचन दिया। इस अवसर पर सभी छात्राओं को उपहार स्वरूप नकद राशि, मिठाई तथा वस्त्र देकर सम्मानित किया। इस पावन अवसर पर छात्राओं ने पदाधिकारियों व सदस्यों को भी राखी बांधी तथा उन्होंने सभी छात्राओं की रक्षा करने का उत्तरदायित्व लिया। इस मोके पर ट्रस्ट के चेयरमैन हरिप्रकाश गुप्ता, अजेश गुप्ता, संजय चावला, वेद प्रकाश साहनी, रामअवतार शास्त्री, सतीश ठेकेदार, कविता जांगड़ा, गरीमा, पूजा, सोमदत्त, भारती, सीमा व नीलम उपस्थित रहे।

रोहतक। रक्षाबंधन के त्यौहार पर माता धनपति देवी चैरिटेबल ट्रस्ट के पदाधिकारियों को बांधी राखी। फोटो : हरिभूमि

ओपन देहाती खेलों में आश्रम के बालकों ने लहराया परचम

रोहतक। अन्तर्राष्ट्रीय जोगेंद्र पहलवान एसएचओ साइबर क्राइम के संयोजन में गांव बामला भिवानी में ओपन खेलों का आयोजन किया गया। मुख्य आयोजक बाबा कृष्ण पुरी महाराज व जोगेन्द्र पहलवान रहे। खेलों के आयोजन की यह विशेषता रही कि आज से 2 साल पहले बाल कल्याण समिति के माध्यम से एक 7-8 साल का गूंगा और बहरा बालक आश्रम में पहुंचा था। अभी तक उसके माता-पिता का कोई पता नहीं लगा। आश्रम के मैनेजेर संदीप कुमार और कोच अभिमन्यु ने इसकी प्रतिभा को देखते हुए उसे कुश्ती के दाव-पेच सिखाये। आज गूंगा पहलवान बामला में 11 सौ रुपये की कुश्ती जीत करके विजेता घोषित किया गया। इसके अतिरिक्त अंडर 16 वर्ष की आयु के बालक अभिषेक 400 मीटर दौड़ में प्रथम, विकास द्वितीय व अजय तृतीय रहा। कबड्डी की आश्रम की टीम अंडर 14 में प्रथम रही। सभी विजेताओं को समिति की तरफ से पारितोषिक दिया। ध्यान रहे की आश्रम के संस्थापक स्वर्गीय चौ प्रियवृत एवं स्वर्गीय ओमानंद सरस्वती स्वयं अच्छे खिलाड़ी थे।

स्वास्थ्य जांच शिविर और कीर्तन का आयोजन

रोहतक। श्री बालाजी धाम गांव डोभ में पूर्णिमा पर स्वास्थ्य जांच शिविर और कीर्तन का आयोजन किया गया। श्री बालाजी धाम गांव डोभ के संस्थापक प्रधान पुरूषोत्तम दास बंसल ने जानकारी देते हुए बताया कि सुबह हवन यज्ञ के साथ-साथ 108 बार हनुमान चालीसा पाठ किया जाता है। प्रत्येक महीने की पूर्णिमा को दोपहर 12 बजे से 3:30 बजे तक श्री बालाजी का कीर्तन, भण्डारे , स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाता है। अशोक तायल ने सपरिवार बतौर मुख्य यजमान शिरकत की। बालाजी के गुणगान के लिए भजन गायक रमेश गौतम नजफगढ़ दिल्ली , पूनम सेन रोहतक, अमित कौशिक डोभ को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर रमेश गुप्ता, रवीन्द्र रूहिल, रवि चिटकारा, मन मोहन धारीवाल, दीपक प्रकाश जैन, धर्मपाल रोहिल्ला,राजेश गोयल, पंडित नरेश कौशिक, एवं मण्डल सदस्यगण और भक्त उपस्थति रहें ।

जाट हाई स्कूल के रिटायर्ड शिक्षक रामधारी खोखर की श्रद्धांजलि सभा आज

रोहतक। जाट हाई स्कूल के रिटायर्ड शिक्षक मास्टर रामधारी खोखर की श्रद्धांजलि सभा 10 अगस्त को भरत कॉलोनी स्थित आवास पर होगी। सुबह 9 बजे हवन यज्ञ होगा। इस दौरान दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की जाएगी। गौरतलब है कि मास्टर रामधारी खोखर का 31 जुलाई को निधन हो गया था। वे करीब 92 वर्ष के थे। उनका जन्म 5 अक्टूबर 1933 को हुआ था। मास्टर रामधारी खोखर ने वर्ष 1954 में जाट हाई स्कूल में बतौर शिक्षक सेवाएं शुरू की थी। उन्होंने 40 वर्ष तक लगातार स्कूल में सेवाएं दी। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अलख जगाने का काम किया। उनके शिष्य देश और विदेश में कार्यरत हैं। मास्टर रामधारी, जाट शिक्षण संस्था के सबसे बुजुर्ग आजीवन सदस्य थे। उनके निधन पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला, पूर्व राजनीतिक सलाहकार प्रो. वीरेंद्र, पूर्व मंत्री मनीष ग्रोवर, कांग्रेस विधायक शकुंतला खटक व भारत भूषण बतरा ने भी शोक जताया था। इसके अलावा अनेक गणमान्य व्यक्ति शोक जताने के लिए पहुंचे थे।

मानसरोवर हॉस्पिटल
REQUIRES
RMO 4
ICU STAFF 6
NURSING STAFF 4
PRO/MARKETING EXECUTIVE 2
COMPUTER OPERATOR 1
नजदीक पी.एन.बी. बैंक, विकास नगर के सामने, सोनीपत रोड, रोहतक
Tel. :- +91-1262-253500 Mobile: 9254302848, 9053005599

hartron
ISO 9001 : 2015
Enhance your talent
HARTRON
SKILL CENTRE For
Computer Education & Training
M.7206002575, 8929411222
Above IDBI Bank, Power House, Chowk, Rohtak
ADMISSION OPEN-2025

Sr. No.	Name of Course	Course Duration
1.	Computer Hardware and Networking Associate	52 (Weeks
2.	Course In Computer Application	52 (Weeks
3.	Course in Digital Accounting	52 (Weeks
4.	Course in Designing and Publishing	52 (Weeks
5.	Course in Web Technology	52 (Weeks
6.	Course in Software Development	52 (Weeks
7.	Advanced Course in Computer Application	52 (Weeks
8.	Digital Marketing Assistant	26 (Weeks
9.	Software Or Application Testing Assistant	26 (Weeks
10.	Assistant PHP Developer	26 (Weeks)
11.	Hardware Peripheral and Installation Assistant	26 (Weeks
12.	Application Development -Android	26 (Weeks
13.	Course in IT Foundation and Tools	26 (Weeks
14.	Certificate Course in Computer Basics & Accounting	26 (Weeks)
15.	Certificate Course in Web Designing and Multimedia	26 (Weeks
16.	C Language	04 (Weeks
17.	C Plus Plus With Oops	08 (Weeks)
18.	PHP With Mysql	04 (Weeks)
19.	Core Java	06 (Weeks
20.	Advance Java	08 (Weeks
21.	Financial Accounting	06 (Weeks)
22.	Autocad	08 (Weeks)
23.	Fundamentals of Cyber Security	06 (Weeks
24.	Programming with Python	12 (Weeks)
25.	Fundamentals of Computer	12 (Weeks)

खबर संक्षेप

महम। हिसार रोड के पास त्रिवेणी लगाते महम इलाके के सामाजिक कार्यकर्ता। फोटो : हरिभूमि

सर्वजातिय सर्वखाप पंचायत ने लगाए पौधे

महम। सर्वजातिय सर्वखाप पंचायत ने इलाके को हरा भरा करने के लिए पौधारोपण अभियान शुरू किया है। इस अभियान के तहत महम और आस पास के गांवों में पौधे रोपित किए जा रहे हैं। शनिवार को महम में भी पंचायत द्वारा यह अभियान चलाया गया। शहर से हाइवे की तरफ जाने वाली सड़कों के आस पास पौधे लगाए गए। हिसार रोड पर पंचायत की ओर से एक त्रिवेणी भी लगाई गई। सर्वजातिय सर्वखाप पंचायत महम चौबीसी के प्रधान अनिल राठी ने कहा कि पंचायत द्वारा जरूरतमंद छात्र छात्राओं की मदद की मुहिम भी शुरू की गई है। इस दौरान अनिल राठी, मनोज नंबरदार, अनिल पूनिया, जनस्वास्थ्य विभाग के एसडीओ राजेश गौतम, पंचायती राज विभाग के एसडीओ संदीप अहलावत, राकेश सिवाच, मनोज फौजी बडेसरा और विजय राठी ने पौधारोपण किया।

प्रदेश में करीब 13 लाख एकड़ रकबा सेम और लवण की समस्या से ग्रस्त

कृषि विभाग का दावा: प्रदेश में 3 साल में बनाया 1,54,931 एकड़ भूमि को फिर से खेती योग्य

अमरजीत एस गिल ▶▶| रोहतक

साल 2021 में प्रदेश के 15 जिलों में 1293259 एकड़ जमीन सेमग्रस्त/लवणीय थी। इसमें अब 154931 एकड़ को फिर से खेती योग्य बना दिया गया है। विभाग का दावा है कि उनके खेतों में अब दोबारा से फसल लहलहा रही हैं। जैसा की बताया जा रहा है कि पहले इन जमीनों में भू-जल स्तर केवल मात्र पांच फीट पर था। अब ये बढ़कर नौ दस फीट तक हो गया है। सेमग्रस्त क्षेत्र में वर्टिकल सिस्टम बेहद कारगर साबित हो रहा है। इस प्रणाली को सरकार उन क्षेत्रों में मुफ्त में स्थापित करती है, जहां सेम की समस्या है और खारा पानी है। इस स्थिति में संबंधित क्षेत्र के किसान पंचायत के माध्यम से कृषि विभाग को अपना प्रस्ताव भेज सकते हैं।विभाग द्वारा सर्वे करवाकर इस प्रणाली को निशुल्क स्थापित किया जाता है।

रोहतक के लिए वर्टिकल ड्रेनेज प्रणाली बनी वरदान

रोहतक जिले में भी 6030 एकड़ जमीन में दोबारा से खेती होने लगी है। जबकि रोहतक में 362361 एकड़ सेमग्रस्त है। जिले में कुल खेती योग्य रकबा 412436 एकड़ है। कृषि विभाग के मुताबिक वर्टिकल ड्रेनेज प्रोजेक्ट के तहत प्रदेश में जमीन ठीक की गई है। भू-जल स्तर ऊपर आने की वजह से लाखों एकड़ क्षेत्र में फसल नहीं हो पाती थी। राज्य सरकार की योजना के तहत कृषि भूमि में वर्टिकल ड्रेनेज प्रणाली को स्थापित किया गया है। ध्यान रहे कि सेमग्रस्त भूमि, जिसे जलभराव वाली भूमि या जल-जमाव वाली भूमि भी कहा जाता है। इस तरह की भूमि जलभराव के कारण खेती के लिए अनुपयुक्त हो जाती है। जलभराव के कारण मिट्टी में लवणता बढ़ जाती है, जिससे मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है और फसलें ठीक से नहीं उग पाती हैं।

कई जिलों में समस्या

सेम की समस्या रोहतक, सोनीपत, झज्जर, भिवानी, फतेहाबाद, हिसार आदि जिलों में सबसे अधिक है। जबकि धान पैदा करने वाले जिले करनाल, पानीपत, कुरुक्षेत्र, कैथल, फरीदाबाद, यमुनानगर, पंचकूला

आदि में ये समस्या नहीं है। सेम बढ़ने का मुख्य कारण धान की खेती करना है। किसान धान तैयार करने के लिए जमीन को पानी से लबालब रखते हैं। इस वजह से भूजल स्तर लगातार बढ़ रहा है। जमीनी पानी खारा होने की वजह से उसे खेती में प्रयोग नहीं किया जा सकता है। इसलिए जमीनी पानी की निकासी बिल्कुल भी नहीं होती। कृषि विभाग उस जमीन को पूरी तरह से खेती के लायक मानता है,जिसका भूजल स्तर पर 3 मीटर से ज्यादा हो। ऐसे में फसल बाढ़ की चपेट में नहीं आती है। क्योंकि जमीन बरसाती पानी को सोख लेती है। जिससे फसल खराब नहीं होती।

■ रोहतक जिले में तीन लाख बैसठ हजार तीन सौ इक्सठ एकड़ भूमि सेमग्रस्त

प्रदेश के जिन क्षेत्रों में सेम की समस्या है, वहां का भूजल स्तर 0 से 1.5 मीटर तक ही है।

1995 के बाद बढ़ी समस्या

साल 1995 में आई बाढ़ के बाद किसानों ने ज्वार, बाजरा, ग्वार की खेती को छोड़कर धान को अपना लिया। चूंकि धान में पानी ज्यादा लगता है। किसान नहरों से पानी की चोरी करके फसल तैयार करते हैं। जिसकी वजह से पानी का स्तर प्रतिवर्ष बढ़ जाता है। जमीनी पानी की निकासी होती नहीं है। इसका एक ही कारण है कि वह खेती लायक नहीं है। अगर किसान जमीनी पानी का प्रयोग करें तो फसल खत्म हो जाती है। क्योंकि पानी में नमक की मात्रा अत्याधिक है। केवल नहरों और माइनरों के साथ की जमीन का पानी खेती में दिया जा सकता है।

धान बोने के लिए किसान मजबूर हैं। जिस एरिया में धान बोया जाता है वहां कपास, बाजरा नहीं बोया जा सकता। कारण धान में ज्यादा पानी की जरूरत होती है और कपास बाजरा और ज्वार में बहुत ही कम। जब आपका पड़ोसी धान में पानी भरेगा तो आपकी बाजरा और कपास की फसल खत्म हो जाएगी।

2021 में सेमग्रस्त एरिया

जिला	रकबा एकड़ में
झज्जर	387422
रोहतक	362361
सोनीपत	181637
जींद	111780
हिसार	71010
अंबाला	44300
चरखीदादरी	32788
यमुनानगर	30664
फतेहाबाद	17752
नूंह	16548
पलवल	15436
भिवानी	9840
सिरसा	9554
गुरुग्राम	1745
पंचकूला	422

जिलेवार सुधार का रकबा

जिला	2022-23	2023-24	2024-25
रोहतक	3050	3900	6030
झज्जर	0	3925	2360
सोनीपत	4065	505	1542
भिवानी	600	8900	13100
जींद	248	2245	4585
मेवात	0	3123	8950
सिरसा	9010	9630	0
चरखीदादरी	0	3725	0
फतेहाबाद	1050	28770	3217
गुरुग्राम	501	1807	1660
पलवल	0	480	0
फरीदबाद	0	80	0
कुल	25712	74925	54294

विभाग लगातार कर रहा प्रयास

सेमग्रस्त और लवणीय जमीन को फिर से खेती योग्य बनाने के लिए कृषि एवं किसान कल्याण विभाग लगातार प्रयास कर रहा है। बीते तीन साल में डेढ़ लाख एकड़ से ज्यादा रकबा खेती योग्य बनाया जा चुका है।

-डॉ.देवेंद्र सिंह सिहाग ज्वाइंट डायरेक्टर,कृषि एवं किसान कल्याण विभाग पंचकूला

जैड ग्लोबल स्कूल ओमेक्स के सभागार में रंगारंग कार्यक्रम का हुआ आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

■ छोटी बच्ची आद्या वाधवा ने अपनी एंकरिंग से दर्शकों को मुग्ध कर दिया।

कुरुक्षेत्र स्थित हरियाणा कला परिषद द्वारा प्रायोजित और हरियाणा इंस्टीट्यूट आफ परफॉर्मिंग आर्ट्स के सह सहयोग से आयोजित नाट्य उत्सव का जैड ग्लोबल स्कूल ओमेक्स के सभागार में रंगारंग शुभारंभ हुआ। जैड ग्लोबल स्कूल की प्रिंसिपल डॉक्टर प्रीति समारोह में मुख्य अतिथि रही जबकि सुनीत धवन ने उत्सव की अध्यक्षता की। छोटी बच्ची आद्या वाधवा ने अपनी एंकरिंग से दर्शकों को मुग्ध कर दिया।

पहले दिन सप्तक कल्चरल सोसायटी के कलाकारों द्वारा नाटक गधे की बारात का मंचन किया गया। ये गधे की बरात का रिकॉर्ड 348 वां मंचन था जिसका निर्देशन विश्व दीपक त्रिखा ने किया। दशकों से खचाखच भरे सभागार में नाटक दर्शकों को बांधने में सफल रहा। सप्तक के अध्यक्ष अविनाश सैनी ने जानकारी दी की सप्तक द्वारा अभी तक इस नाटक का भारत के विभिन्न शहरों के अलावा पाकिस्तान के लाहौर में भी मंचन किया जा चुका है। हरियाणा के किसी भी ग्रुप द्वारा किया गया यह पहला हिंदी नाटक है, जिसके 348 मंचन हुए हैं। हरिभाई बड़गांवकर द्वारा मूल रूप में मराठी में लिखे इस नाटक का हिंदी रूपांतर राजेंद्र मेहरा और रमेश राज हंस ने किया।

हरियाणा कला परिषद द्वारा प्रस्तुत इस नाटक में कल्लू कुमार की भूमिका अविनाश सैनी ने, बृहस्पति गुरु और चौपट राजा की भूमिका डॉक्टर सुरेंद्र शर्मा ने, दीवान की भूमिका तरुण पुष्प त्रिखा ने, शक्ति सरोवर त्रिखा ने इंद्र अनिल शर्मा ने चित्रसेन, चेरी गिरधर ने गंगी, महक कथूरिया ने राजकुमारी, प्रतिष्ठा और वर्षा ने अप्सरा रंभा और राजनर्तकी, कुमार गर्व ने द्वारपाल और नीतिका सिंगल ने बुआ की भूमिका निभाई। प्रसिद्ध नगाड़ा वादक सुभाष नगाड़ा के संगीत से सजी प्रस्तुति में विकास रोहिला और गुलाब सिंह ने हारमोनियम के साथ-साथ गायकी के रंग बिखेरे। मेकअप अनिल शर्मा ने, संगीत और लाइट पक्ष जगदीप जुगनू ने संभाला और प्रोडक्शन का जिम्मा संभाला यतीन वाधवा ने।

गधे की बारात नाटक एक पौराणिक कथा पर आधारित है। इंद्रदेव के दरबार में अप्सरा रंभा नृत्य कर रही है तभी चित्र सेन नामक गंधर्व सुरा के नशे में अप्सरा रंभा का हाथ पकड़ लेता है। इंद्र गुस्से में आकर उसको श्राप देता है कि वह मृत्यु लोक में गधा बनाकर भटकेगा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉक्टर प्रीति, विशिष्ट अतिथि सुनीत धवन के अलावा रंगप्रेमी डॉक्टर संतोष मुदगिल, राज वर्मा, सुशीला देवी, डॉक्टर हरीश वशिष्ठ, नरेंद्र शर्मा आदि मौजूद रहे।

बच्चों को संस्कारवान बनने की दी प्रेरणा

रोहतक। मानव उत्थान सेवा समिति में मानव धर्म आश्रम की प्रभारी रोशनी बाई की अध्यक्षता में माता अमृता के पावन जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में शहर की एमटीएफसी संस्था में 150 जरूरतमंद बच्चों को पाठ्य सामग्री, कॉपी, पैंसिल व अन्य सामान भेंट किया। प्रभारी रोशनी बाई ने मिशन एजुकेशन के तहत सभी को माता अमृता की शिक्षाओं पर चलकर अच्छा इंसान और गलती न करने व संस्कारवान बनने की प्रेरणा दी। इस मौके पर मानव सेवा दल जिला प्रमुख हरिओम व अन्य मौजूद रहे।

■ बच्चों को पाठ्य सामग्री दी

शिवाजी कॉलोनी में रक्षाबंधन पर बुजुर्गों ने लगाए पौधे

■ हर व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम दो पौधे अवश्य लगाने चाहिए : जसबीर कुमार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

वार्ड नंबर 20 स्थित शिवाजी कॉलोनी शहीद महावीर पार्क में रक्षाबंधन के अवसर पर बुजुर्गों ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया। इस दौरान विशेष रूप से एक पौधा मां के नाम पर लगाया गया, जिससे लोगों को प्रकृति और मातृत्व दोनों के प्रति सम्मान का भाव जागृत हो। कार्यक्रम में पुराना हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी निवासी जसबीर कुमार ने कहा कि हर व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम दो पौधे अवश्य लगाने चाहिए। उन्होंने बताया हम सबको बताना है और सबसे पौधे लगवाने हैं। पेड़ न केवल ऑक्सीजन का स्रोत हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर भी हैं। स्थानीय निवासियों ने रक्षाबंधन के पर्व पर पौधारोपण को भाई-बहन के अटूट रिश्ते की तरह एक प्रतीक बताया जो देखभाल और संरक्षण से समय के साथ और मजबूत होता है। पार्क में लगाए गए पौधों की देखभाल करने का संकल्प भी सभी ने मिलकर लिया। कहा कि ऐसे प्रयासों से न केवल पार्क की सुंदरता बढ़ेगी, बल्कि पर्यावरण को भी लाभ मिलेगा। उन्होंने नगर निगम और समाजसेवी संगठनों से अपील की कि अधिक से अधिक स्थानों पर पौधारोपण अभियान चलाए जाएं।

पुल के पास गोवंश की आवाजाही से हादसों का खतरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

नगर निगम पर सवाल: निवासियों ने नगर निगम की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि शहर में आवारा पशुओं को पकड़ने का अभियान चलाया जा रहा है, लेकिन शिवाजी कॉलोनी मोड़ और पुल के पास की स्थिति पर किसी का ध्यान नहीं है। रोजाना सुबह और शाम के समय यहां जाम लगना आम बात हो गई है, लेकिन इसके समाधान के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं।

जाम की वजह से एंबुलेंस तक फंस रही: वार्ड के निवासी समाजसेवी जसबीर, सोनू और सुनील का कहना है कि इस मार्ग से स्कूल बसें, एंबुलेंस, ऑटो, ट्रक और निजी वाहन गुजरते हैं, और कई बार जाम की वजह से एंबुलेंस तक फंस जाती हैं, जिससे मरीजों की जान पर भी खतरा बन जाता है। वहीं स्कूल के बच्चों को भी जाम के कारण बहुत ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ता है। बार बार शिकायत भी कर चुके है उसके बावजूद यह हालात बने हुए है।

वार्ड नंबर 20 स्थित शिवाजी कॉलोनी मोड़ नजदीक पुल के पास सड़क पर रोजाना गोवंश का खुलेआम घूमना और कचरा खाना लोगों के लिए परेशानी का सबब बना हुआ है। यहां रोजाना दर्जनों गायें और बैल सड़क के बीचोंबीच बैठ जाते हैं, जिससे वाहनों की आवाजाही बाधित होती है और कई बार लंबा जाम लग जाता है। यह मार्ग शहर के सबसे व्यस्त रास्तों में से एक है, जहां दिनभर भारी ट्रैफिक चलता है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि गोवंश के अचानक सड़क के बीच में बैठ जाने से दोपहिया और चारपहिया वाहन चालकों को काफी दिक्कत का सामना करना पड़ता है। कई बार वाहन चालकों को अचानक ब्रेक लगानी पड़ती है, जिससे हादसों का खतरा भी बढ़ जाता है। बरसात के दिनों में यह समस्या और गंभीर हो जाती है, क्योंकि सड़क पर पानी और कचरे के बीच गोवंश का जमावड़ा बढ़ जाता है। पास में लगे कूड़ेदानों और खुले में फेंके गए कचरे से गोवंश भोजन तलाशते हैं। इसमें पॉलिथीन, प्लास्टिक और गली-सड़ी चीजें भी होती हैं, जो उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। पशु चिकित्सकों के अनुसार, पॉलिथीन खाने से गोवंश को गंभीर बीमारियां हो सकती हैं और कई बार मौत भी हो जाती है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 9253681019-20,
फोन : 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
सिटी कार्यालय :- हरिभूमि, कृषि विज्ञान केन्द्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9996959400
मुख्य कार्यालय :- हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

बैठक | नागरिक अस्पताल कलानौर में मासिक मीटिंग

एक बेटी को शिक्षित करने से होते हैं दो परिवार शिक्षित: डॉ. कमल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कलानौर

सिविल सर्जन डॉ. रमेश चंद्र आर्य के दिशा-निर्देशों की पालना करते हुए उप मंडल नागरिक अस्पताल कलानौर में मासिक मीटिंग का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ. कमल वर्मा ने की। इस दौरान सभी स्वास्थ्य कार्यक्रमों की समीक्षा की गई और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

डॉ. वर्मा ने उपस्थित डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों को अपने-अपने क्षेत्रों में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम को अधिक से अधिक बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आज के युग में बेटा-बेटी समान हैं, और बेटी घर में रत्न समान होती है। एक बेटी को शिक्षित करने से दो परिवार शिक्षित होते हैं। उन्होंने मातृ स्वास्थ्य पर जोर देते हुए निर्देश दिया कि प्रत्येक गर्भवती महिला का अर्ली रजिस्ट्रेशन किया जाए और उसकी चारों एएनसी जांच समय पर सुनिश्चित की जाए। आयरन, फोलिक एसिड और कैल्शियम की गोलियां समय पर उपलब्ध कराई जाएं। एएनएम और आशा वर्कर को गर्भवती महिलाओं की सहेली बनकर उनकी हर गतिविधि पर नजर रखने और उचित मार्गदर्शन देने को कहा गया।

ये रहे मौजूद

बैठक में आरएमओ डॉ. तेज सिंह, डॉ. विवेक गेरा, दंत चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिंह, डॉ. आनंद प्रकाश, डॉ. विक्रम, डॉ. सलोनी, ब्लॉक एक्सटेंशन एजुकेटर जसवीर रंगा, हेल्थ इंस्पेक्टर सतीश कुमार, सीनियर नर्सिंग ऑफिसर सुनीता, मुकेश, संगीता, अकाउंटेंट पूजा, एक्टिंग एलएचवी सरोज देवी, सभी एएनएम और एमपीएचडब्ल्यू (मेल) मौजूद रहे।

श्रद्धांजलि और संगोष्ठी का आयोजन आज

रोहतक। विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के जिला संयोजक अशोक खुराना ने बताया कि 10 अगस्त शाम 5 बजे शहीद मदनलाल ढींगरा कम्युनिटी सेंटर, पुरानी आईटीआई में देश के विभाजन के गुमनाम शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाएगी। इस अवसर पर एक जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन होगा, जिसमें करनाल के पूर्व सांसद संजय भाटिया और पानीपत की पूर्व मेयर अवनीत कौर मुख्य वक्ता होंगे। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री मनीष ग्रोवर भाजपा जिला अध्यक्ष रणवीर ढाका मेयर राम अवतार वाल्मीकि और जिला प्रभारी सतेन्द्र परमार विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे।

अशोक खुराना ने कहा कि भारत का विभाजन ऐसा गहरा जख्म है जो आज तक भरा नहीं गया। 15 अगस्त 1947 को जब देश स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था, उसी समय लाहौर, मुल्तान, झंग, रावलपिंडी, मिंटगुमरी और लायलपुर जैसे शहरों से हजारों काफिले मौत के साये में भारत की ओर बढ़ रहे थे। लाखों हिंदू-सिख हिंसा के शिकार बने, 2 करोड़ लोग अपनी जमीन-जायदाद छोड़ने पर मजबूर हुए, 10 लाख से अधिक लोगों की हत्या हुई और हजारों महिलाओं ने अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए बलिदान दिया।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के संस्थापक की 144वीं जयंती धूमधाम से मनाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

■ समारोह की शुरुआत क्षेत्रीय प्रमुख अजय दुआ ने संस्थापक के चित्र पर माल्यार्पण से की।

■ सर सोरावजी का जन्म 9 अगस्त 1881 को मुंबई में एक पारसी परिवार में हुआ था

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की सभी शाखाओं एवं क्षेत्रीय कार्यालय में शनिवार को बैंक के संस्थापक सर सोरावजी पोचखानवाला की 144वीं जयंती हर्षोल्लास से मनाई गई। सर सोरावजी का जन्म 9 अगस्त 1881 को मुंबई में एक पारसी परिवार में हुआ था।

समारोह की शुरुआत क्षेत्रीय प्रमुख अजय दुआ ने संस्थापक के चित्र पर माल्यार्पण से की। इस अवसर पर उन्होंने संस्थापक के जीवन और योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सर सोरावजी ने स्वदेशी आंदोलन से प्रेरित होकर वर्ष 1911 में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना स्वदेशी बैंक के रूप में की। वर्ष 1935 में बैंकिंग क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए ब्रिटिश राज ने उन्हें 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया। अजय दुआ ने कहा कि हमें संस्थापक के सपनों को आगे बढ़ाते हुए बैंक को पुनः महान बैंक बनाने की दिशा में कार्य करना होगा। कार्यक्रम में मुख्य प्रबंधक प्रवीन कुमार, नवीन रंजन, अनिल नेहरा, जगदीश परिहार और हिमांशु बाजपेई सहित सभी स्टाफ सदस्य मौजूद रहे और संस्थापक के चित्र पर पुष्प अर्पित किए।

haribhoomi.com

हरिभूमि रविवार भारती

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

स्वाधीनता दिवस विशेष

रोहतक, रविवार
10 अगस्त 2025

P-1

आवरण कथा
ओम निश्चल

हम सब देशवासी आगामी 15 अगस्त 2025 को भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाएंगे। कदम-कदम आगे बढ़ते हुए हमने कई अभूतपूर्व सफलताएं हासिल कीं, नए-नए मुकाम को छुआ। हम निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर भी हैं। लेकिन आज भी देश में कुछ ऐसी चुनौतियां बरकरार हैं, जिनका निवारण किए बिना हम अपना प्राचीन गौरव प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इसके लिए देश के हर नागरिक के मन में स्वाधीनता के प्रति सम्मान भाव होना अत्यंत आवश्यक है।

79वां स्वतंत्रता दिवस

आजादी की फलश्रुति

एक-एक कदम हौले-हौले चलते हुए हम सब भारत देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं। एक लंबी यात्रा हमने आजादी के बाद तय कर ली है। 1947 से 2025 तक की स्वातंत्र्योत्तर यात्रा में देश ने तमाम क्षेत्रों में बहुत तरक्की की है, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की है वरना एक ऐसा दौर था, जब गेहूं भी अमेरिका से आयात करना पड़ता था। उद्योग धंधों के क्षेत्र में भी लघु उद्योग सेक्टर और मझोले उद्योगों की स्थापना एवं विकास में देश ने मजबूती से कदम रखा है। तकनीकी सामर्थ्य की दिशा में भी देश ने अग्रतर स्थिति हासिल की है। आजादी के बाद बनी पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप हर क्षेत्र में देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य हुआ। आजादी के बाद देश में बड़े-बड़े बांध बने, विद्युत परियोजनाएं लगाई गईं, सिंचाई के लिए नहरों का संजाल तैयार किया गया। बड़े-बड़े हाईवेज बने, इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ ताकि हर व्यक्ति को बैंकिंग योजनाओं का लाभ मिले। यानी, आजादी के बाद देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है।

हर वर्ग ने निभाई अपनी भूमिका: आजादी की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, मजहब, संस्कृति या समुदाय ने नहीं लड़ी थी। इसमें तैंतीस करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी रही थी। राजनैतिक आजादी तो सन 1947 में ही हमें मिल गई थी। लेकिन आजादी का मिलना तब सार्थक हो सकता है, जब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हर क्षेत्र में देश तरक्की, करता हुआ दिखे। यों तो इस आजादी को हासिल करने में नेता, पत्रकार, किसान, मजदूर, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबका योगदान रहा। उसके परिणामस्वरूप ही हमें आजाद भारत मिल सका। आजादी के बाद हासिल उपलब्धियों को तो हम सब देखते ही हैं, लेकिन एक लेखक हर क्षेत्र में आजादी की आकांक्षाओं के प्रतिफल को गहराई से महसूस करता है। वह नेता, अभिनेता, चिंतक, समाजशास्त्री एवं अर्थशास्त्री आदि अनेक भूमिकाओं में होता है। वही होता है, जो बिना लाग-लपेट के देश की वाकई तरक्की को अपने मानक पर कसता है, तभी वह दुष्यंत कुमार के शब्दों में यह लिख सकता है- *यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां। हमें मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।*

दुर्भाग्यवश धीरे-धीरे कलमकार भी अपनी नैतिकता भूलते गए। इसी पर कवि गोपाल सिंह नेपाली ने अपने एक गीत में लिखा है- *तुझ-सा लहरों में बह लेता/ तो मैं भी सत्ता, गह लेता/ ईमान बेचता चलता तो/ मैं भी महलों में रह लेता/ हर दिल पर झुकती चली मगर/ आंसू वाली नमकीन कलम/ मेरा धन है स्वाधीन कलम/ आजादी मिलने का मोह भंग भी हुआ।*

धीरे-धीरे लेखक की स्वाधीन चेतना भी सुप्त हो गई, उसकी कलम पूंजीपतियों और इजारेदारों के गुण गाने लगी। यही वजह है कि विभाजन के दंश और आजादी के लिए 1857 से किए गए संघर्ष के बाद और जलियांवाला बाग के नृशंस हत्या कांड के बाद मिली आजादी का फल लूटने में होड़ लग गई। देश बनाने वाले और उसे स्वाधीन कराने वाले तो नेपथ्य में चले गए और स्वार्थी लोग चांदी काटने लगे।

आजादी मिलने के बाद आजादी मिलने का मोहभंग भी उतना ही प्रभावी हुआ और होता गया। यह ऐसा ही दौर था, जब 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'राग दरबारी' जैसी रचनाएं लिखी गईं। लिहाजा आजादी मिलने की उपलब्धियों की बंदरबांट होने लगी।

आजादी के शुरुआती दौर में अज्ञेय जैसे कद्दावर लेखक ने भी एक निबंध में लिखा था, 'मिला सब कुछः सब बेपेंदी का। शिक्षा मिली उसकी नींव, आत्म गौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, उसकी नींव, अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली, यानी आजादी में जन्मे-पले मुझको-आजादी के आदि पुरुष को चेहरा मिला, व्यक्तित्व नहीं मिला... और बिना व्यक्तित्व के चेहरा क्या होता है? स्पष्ट है कि वह फकत चेहरा होता है। पहन लो, उतार लो, उस पर अलकतरा पोत दो चूना लगा दो... और यही सब तो हम कर रहे हैं... हर कोई कर रहा है।' (कवि मन, पृष्ठ 63) हमारे समय के एक बड़े कवि का यह विक्षुब्ध कथन है आजादी और उसकी फलश्रुति को लेकर।

क्यों बंटते गए दायरों में हमः यह सोचने की बात है कि जिस जज्बे से आजादी पाने के लिए हर नागरिक संघर्षरत था। सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण के लोग, यहां तक कि पूंजीपति भी देश की आजादी के लिए तन, मन, धन से लगे थे। सभी में राष्ट्रीय चेतना की अलख जग रही थी। भले आजादी के महासमर में गांधी, सुभाषचंद्र बोस, नेहरू और पटेल जैसे चंद बड़े नायक ही नजर आते हों पर आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

वैश्विक शक्ति बनने का सामर्थ्यः इतनी विषमताओं के बावजूद, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' भारत विश्व की कूटनीति के सम्मुख अडिग होकर खड़ा रह पाया है तो यह इसकी सफल विदेश नीति का ही परिचायक है। देखते-देखते देश तरक्की की पायदान पर अग्रसर है। देश तमाम क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हुआ है, जहां सुई तक नहीं बनती थी, आज हम अनेक चीजें, शोधित तेल, खाद्यान्न, वस्त्रादि विदेशों को निर्यात कर रहे हैं। अमेरिकी प्रभुत्व में सिलीकॉन वैली के भारतीय तकनीकविदों की बड़ी भूमिका है। भारत आजादी के इन अठहत्तर सालों में आज आर्थिक स्तर पर एक महाशक्ति बन चुका है। सैन्य शस्त्रों और अंतरिक्ष शोध के क्षेत्र में हम निरंतर नए क्षितिज को स्पर्श कर रहे हैं। यही नहीं सदियों पुरानी अपनी संस्कृति व ज्ञान परंपरा के नाते हम विश्वगुरु बनने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह ऋषियों, संतों, महात्माओं की तपोभूमि रही है, यह अपरिग्रह, सदाचार, अहिंसा और सर्वधर्मसमभाव की भूमि है। हमने पूरी विश्व-वसुधा को मानवता के नाते एक समझा है। हमने विश्व के कमजोर मुल्कों का हर मुसीबत में साथ दिया, हर स्तर पर विश्व शांति की पहल और अपीलें की हैं। हमने विश्व स्तर पर रंगभेद का विरोध किया। इसीलिए विश्व में हमारी सबसे अलग प्रतिष्ठा है।

सशक्त राष्ट्र निर्माण में निभाएं भूमिकाः हालांकि अभी हमारे सम्मुख चुनौतियां भी कम नहीं हुई हैं। चिंता इस बात की है कि दलीय संकीर्णताएं ज्यादा हावी हैं, जाति, मजहब विचारधारा और सामाजिक स्तर पर लोग बंटे-बंटे से नजर आते हैं। आज आजाद हुए 78 साल हो गए हैं पर हम न भूलें कि अब यह बाहर से दिखने वाली गुलामी का दौर नहीं, यह सूक्ष्म गुलामी का दौर है- हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे सोच पर हमले इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है। ऐसे सूक्ष्म हमलों के प्रति हमें सावधान रहना है। सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हमें आपस में बांटने वाली सोच और अलगाववादी ताकतों से सावधान रहना होगा। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जहां हर नागरिक स्वाभिमान का अनुभव कर सके और उसे यह लगे कि यह देश उसका है, उसके सुख-दुख का साथी और उसके हितों का पहरुआ है। तभी सही मायने में देश का हर नागरिक स्वयं को आजाद, समृद्ध और सुरक्षित महसूस करेगा। इसके लिए हम सभी को अपने-अपने स्तर पर भूमिका निभाने के लिए संकल्पित होना होगा। *

सदियों के संघर्ष के बाद आर्थिक रूप से कमजोर देश रहा भारत, आज अगर विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना है तो इसके पीछे हमारा निरंतर संघर्ष और सही दिशा में किया गया प्रयास ही रहा है। कैसे हासिल की हमने यह उपलब्धि, उस पर एक नजर।

हर चुनौती को पार कर

हम बने आर्थिक महाशक्ति

उपलब्धि
लोकमित्र गौतम

दो शताब्दियों तक परतंत्र रहने के बाद जब 1947 में भारत आजाद हुआ, तो हमें राजनीतिक आजादी तो मिल गई, लेकिन आर्थिक आजादी अभी भी दूर का सपना था। इस राजनीतिक आजादी के लिए हमने विभाजन की जो विभीषिका झेली थी और ढाई शताब्दियों तक हमारा जिस तरह से औपनिवेशिक शोषण हुआ था, उस सबके कारण कृषि पर आधारित हमारी अर्थव्यवस्था बेहद पिछड़ी हुई थी और औद्योगिकीकरण का हमारे पास लगभग न के बराबर आधार था। ऐसे में आजादी के बाद भारत को अपनी आर्थिक दिशा खुद तय करनी थी। हर तरफ चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। लेकिन इन्हीं चुनौतियों के बीच से हमने 78 सालों में अपनी जो आर्थिक यात्रा तय की है, वह महज आंकड़ों का खेल नहीं है। वह हमारे 78 वर्षों की अथक मेहनत, आत्मावलोकन और साहसिक निर्णयों का परिणाम है।

फर्श से पहुंचे अर्श परः हमारी आर्थिक उपलब्धि, किसी तरह की तुलना या इम्तिहान के लिए नहीं है। हमने पिछले 78 सालों में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वो हमारे आत्मगौरव की जीती-जागती कहानियां हैं। साल 1947 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद आज की कीमतों पर महज 2.7 लाख करोड़ रुपए था। जबकि 78 सालों बाद आज हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और 2024-25 के आकलन के मुताबिक हमारा सकल घरेलू उत्पाद 33.2 लाख करोड़ रुपए है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमने 78 सालों में करीब 3100 फीसदी आर्थिक प्रगति की है। ये उपलब्धियां और ये आर्थिक विकास हमने पिछले 78 सालों में दिन-रात की मेहनत के बाद हासिल किया है।

करना पड़ा कठिन संघर्षः जब भारत से अंग्रेज गए थे, तो हमारा औद्योगिक उत्पादन नगण्य था। हमारा बुनियादी ढांचा पूरी तरह से ध्वस्त था, क्योंकि आजादी के लिए हमने 1857 से लेकर 1947 तक यानी 90 साल तक युद्ध लड़ा था। इस कारण अंग्रेज इस दौरान भारत के अधिक से अधिक संसाधन लूटकर इंग्लैंड ले गए थे और जब उनको ये मालूम पड़ा कि वह अब भारत में नहीं रह सकते, तो उन्होंने हमारे बुनियादी आर्थिक विकास पर विशेषकर औद्योगिक विकास पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने ढाई सौ सालों के कार्यकाल में उन्होंने जो आर्थिक ढांचा खड़ा किया था, उसे भारत से जाने के पहले बुरी तरह से ध्वस्त कर दिया था। जिस समय भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ था, हम मूलतः कच्चा माल आपूर्ति करने वाले एक उपनिवेश देश भर थे। इसलिए जरूरी था कि आजादी के बाद भारत का पूरी तरह से आर्थिक पुनर्निर्माण होता और ऐसा ही हुआ।

निरंतर बढ़ते रहे आगेः साल 1950 से 1980 के दौरान भारत ने नियोजित अर्थव्यवस्था की जबर्दस्त कीमत चुकाई। क्योंकि योजनाबद्ध ढंग से विकास करने का एकमात्र यही रास्ता था। जिस कारण लंबे समय तक हमारी आर्थिक विकास दर 3 से 3.5 के बीच रही। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसी विकास दर के दौरान हम परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, हरित क्रांति और देश में भारी उद्योगों का निरंतर जाल भी बिछाते रहे, जो हमारी अथक मेहनत और दूरदृष्टि का नतीजा था।

लागू किए आर्थिक सुधार कार्यक्रमः 78 सालों के विकास क्रम को देखें तो 1991 के बाद वैश्विक दबावों के बीच हमने आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किए, विशेषकर 1991 में तब, जब हमारे पास सिर्फ 15 दिनों के आयात भर के लिए विदेशी मुद्रा शेष थी। उस समय हमने आईएमएफ के पास अपना सोना गिरवी रखकर कर्ज लिया और आज स्थिति यह है कि हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर से भी ज्यादा का है। 2024 में तो एक समय यह 724 अरब डॉलर की ऊंचाई को भी पार कर गया था। आज भारत आईटी, फार्मा, रक्षा, डिजिटल पेमेंट, अंतरिक्ष और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है।

दूर करनी होंगी कमजोरियांः हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था की कुछ बड़ी कमजोरियां भी हैं, जो आज भी हमें प्रतिव्यक्ति आय के मामले में दुनिया के गरीब देशों की कतार का हिस्सा बनाती हैं। आज भी भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार नहीं है, जिस कारण गांवों से शहरों की ओर तूफानी रफ्तार से पलायन हो रहा है। हमारे देश के असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों की आज भी पहाड़ सरीखी चुनौतियां हैं और आज भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार का 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कच्चे तेल के आयात पर खत्म होता है। बावजूद इसके भारत आज अपने आपमें एक आर्थिक शक्ति है। साल 2017 के बाद से अब तक हम दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाले देश हैं। *

दोहे / प्रो. शरद नारायण खरे

शोभित,सुरभित,तेजमय,पावन अरु अभिराम।
राष्ट्र हमारा मान है, लिए उच्च आयाम।।

राष्ट्र-वंदना मैं करूं, करता हूं यशगान।
अनुपमेय, उत्कृष्ट है, भारत देश महान।।

नदियां, पर्वत, खेत, वन, सागर अरु मैदान।
नैसर्गिक सौंदर्यमय, मेरा हिंदुस्तान।।

लिए एकता अति मधुर, गीता और कुरान।
दीवाली-होली सुखद, एक्यभाव-पहचान।।

सारे जग में शान है, मान रहा संसार।
राष्ट्र हमारा है प्रखर, फैलाता उजियार।।

मातु-पिता, गुरु, नारियां, पातीं नित सम्मान।
संस्कार मम राष्ट्र की, है चोखी पहचान।।

तीन रंग के मान से, हैं हम सब अभिभूत।
राष्ट्रवंदना कर रहे, भारत मां के पूत।।

राष्ट्रप्रेम अस्तित्व में, आया नवल विहान।
कण-कण करने लग गया, भारत का यशगान।।

भारत की सीमाओं पर, जमे हुए हैं लाल।
शौर्य, वीरता देखकर, होते सभी निहाल।।

आजादी की वंदना, करता सारा देश।
आओ, हम रच दें यहां, वासंती परिवेश।।

सरोकार
शैलेंद्र सिंह

तब नई पीढ़ी भी समझेगी

स्वाधीनता की कीमत

देश की जो पीढ़ी पिछली सदी के अंत में या इक्कीसवीं सदी में जन्मी है, उसकी जीवनशैली कई मायने में विशिष्ट है। इसलिए उनको स्वाधीनता की कीमत समझाने के लिए कुछ अलग प्रयास करने होंगे।

आजादी का मतलब सिर्फ गुलामी से मुक्ति भर नहीं होता। आजादी उस आत्मसम्मान, अधिकार और स्वाभिमान की अनुभूति है, जो किसी भी समाज के पूर्ण विकास के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन जब हम आजादी की 78वीं वर्षगांठ पर अपनी डिजिटल पीढ़ी यानी जेन जेड और अल्फा जनरेशन की तरफ नजर उठाकर देखते हैं, तो बहुत निराशा होती है, क्योंकि इन्हें आजादी की कीमत का मानो कोई भान ही नहीं है। दरअसल, इन पीढ़ियों के लिए आजादी एक डिफॉल्ट सेटिंग की तरह है। ये पीढ़ी किसी संघर्ष या बलिदान की विरासत की हिस्सेदार नहीं रही है और न ही इसे आजादी के लिए अपनी जिंदगी में किसी तरह की कोई कीमत चुकानी पड़ी है। ऐसे में इन्हें आजादी की कीमत भी समझ आए तो भला कैसे?

डिजिटल जनरेशन की दुनियाः हमारी जेन जेड और अल्फा जनरेशन वास्तव में डिजिटल जनरेशन है। इनकी दुनिया इसके पहले की पीढ़ियों से बिल्कुल अलग है। इन्हें 24X7 मोबाइल चाहिए, रील चैटबॉट और इंस्टेंट रिवॉर्ड्स भी चाहिए। इनके पास सूचना का अकूत भंडार है, लेकिन अपने अनुभवों की मुट्ठी भर पूंजी नहीं है। स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, पसंद का पहनावा और प्यार जैसी हर चीज पर इनका अधिकार है और इनको लगता है यह तो सब जन्मसिद्ध अधिकार है यानी, ये तो हर किसी को मिलते ही मिलते हैं। इनके दिमाग में कभी नहीं आता कि संविधान प्रदत्त अधिकार हमें कितनी कुर्बानियां देकर मिले हैं? हमारी पूर्वज पीढ़ियों को इन्हें पाने के लिए कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं? न जाने कितने लोग जेल गए, न जाने कितने लोग जेल में ही मर गए, हजारों लोगों ने फांसी का फंदा चूमा। आजादी के लिए अपने सारे सपनों को दांव पर लगा दिया, तब कहीं जाकर हमें यह आजादी मिली है। लेकिन डिजिटल जनरेशन को इस सबका प्रायः कोई एहसास नहीं होता है।

नए जमाने की जीवनशैलीः हालांकि यह नई जनरेशन संवेदनहीन नहीं है। जलवायु परिवर्तन के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए, लैंगिक समानता के लिए और जानवरों को लेकर संवेदनशीलता इस पीढ़ी में भी खूब है। मगर अपने जमाने के मुद्दों के लिए। नई पीढ़ी विरोध और विद्रोह करने से नहीं डरती बल्कि पिछली पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यवस्थित सुधारों और बदलावों की मांग करती है। लेकिन देखने वाली बात यह है कि इसका ज्यादातर विरोध ऑनलाइन होता है या कहें यह ऑनलाइन विरोध के लिए खुद को ज्यादा फिट पाती है। वास्तविक धरातल पर इसे उतरना कम पसंद है। उनकी इस सोच के लिए नई पीढ़ी को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली पुरानी पीढ़ी को भी कुछ बातें याद रखनी होंगी। पुरानी पीढ़ी के लोग सोचते हैं देश, दुनिया, इतिहास और वर्तमान को लेकर जिस तरह की सोच वो रखते हैं, वैसी ही यह नई पीढ़ी भी रखे। सवाल है, आज की पीढ़ी क्यों अपनी पिछली पीढ़ियों की तरह आजादी को लेकर संवेदनशील नहीं है?

पिछली पीढ़ी निभाए दायित्वः मध्य वय और बुजुर्ग वय से गुजर रही पीढ़ी को समझना होगा कि सिर्फ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की बात करने भर से नई पीढ़ी आजादी की लंबी लड़ाई को लेकर अपने पूर्वजों की कृतज्ञ नहीं हो जाएगी। हमें इस पीढ़ी को उन लाखों लोगों की सच्ची कहानियां भी बतानी होगी, जो साधारण लोग थे और आजादी के लिए कुर्बान हो गए। हजारों किसान, लाखों मजदूर, आदिवासी, स्त्रियां, पत्रकार, आम दस्तकार और शिक्षक जैसे सैकड़ों विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने आजादी के लिए अपने आपको मिटा दिया। हमारी नई पीढ़ियां आजादी में सांस ले सकें, इसलिए पुरानी पीढ़ियों ने खुद को आजादी के संघर्ष की नींव में कैसे गला दिया। हमें नई पीढ़ी को बिना लाग-लपेट के, बिना किसी तरह के अतिवादी जिक्र के, इन आम लोगों के दुख दर्द को भी साझा करना होगा। हमें नई पीढ़ी को ये समझाना होगा कि लाखों जीवंत उदाहरणों से कि हमें जो आजादी मिली है, वह तर्क-वितर्क से नहीं मिली, वह कुछ गिने चुने लोगों के प्रताप से नहीं मिली बल्कि लाखों लोगों की कुर्बानियों से मिली है। जब हम अपनी नई जनरेशन को आजादी की लड़ाई लड़ने वाली पीढ़ी का समूचा ब्योरा सौंपेंगे, तब कहीं जाकर इस पीढ़ी में इस सबके प्रति संवेदना उमड़ेगी। हमें नई पीढ़ी को बताना होगा कि संविधान का उपहार हमें यूं ही नहीं मिल गया।

उनके सवालों का दें तार्किक जवाबः नई पीढ़ी अकसर सवाल पूछती है कि स्वाधीनता सेनानियों ने ऐसा क्यों नहीं किया? वैसा क्यों नहीं किया? तो हमें इस पीढ़ी को बताना होगा कि यह पूरा मसला महज कुछ चाहने और कह देने भर का नहीं था। ये बेहद जटिल और बेहद दुरुह मसले थे, इतना आसान नहीं है यह कहना कि फलां ने यह क्यों नहीं किया? कई बार इतिहास की कुछ विरासतें हमारे नियति का हिस्सा होती हैं। विभाजन भी ऐसी ही नियति थी। पुरानी पीढ़ी को जरूरत है कि वह नई पीढ़ी के लिए सिर्फ उपदेशक न बने, बल्कि इस बात की गहराई से पड़ताल करे कि आखिर उसे आजादी के अथक संघर्ष को लेकर उतनी संवेदनशीलता क्यों नहीं है, जितनी होनी चाहिए? तब हम नई पीढ़ी को आजादी की कीमत समझाने में सफल हो सकेंगे। अगर आज की नई पीढ़ी अपने तरीके से आजादी की परिभाषा गढ़ना चाहती है, तो यह उसका हक है। लेकिन जिन्होंने आजादी की लड़ाई में खुद को कुर्बान करके हमारे लिए स्वतंत्रता अर्जित की है, उन्हें यूं ही नहीं भूला जा सकता। पुरानी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह नई पीढ़ी को इसके महत्व और इसकी संवेदनशीलता को समझाए। यह पीढ़ी तेज है, त्वरित अंदाज में निर्णय लेती है, इसलिए अगर इस पीढ़ी को यह बात सही तरीके से बता दी जाए कि हमें जो आजादी हासिल है, वह लाखों लोगों के बलिदान और देशभक्ति का नतीजा है, तो नई पीढ़ी को आजादी का पाठ पढ़ाना और उसके लिए पर्याप्त संवेदनशील बनाना इतना मुश्किल नहीं होगा। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

प्रतिबंधित पत्रकारिता के अनसुने किस्से

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान सिर्फ आंदोलनकारी ही जेल नहीं भेजे गए बल्कि आंदोलन के समर्थन में पत्र-पत्रिकाएं निकालने वाले अनेक संपादकों को भी जेल में डाल दिया गया था। साथ ही अनेक अखबार या उनके विशेष अंक प्रतिबंधित कर दिए गए थे। ऐसे ही प्रतिबंधित अंकों की खोजबीन कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफेसर, संतोष भदौरिया ने उसे पुस्तक रूप दिया है, जिसका नाम है-अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता।

किताब भारत में स्वाधीनता आंदोलन के विकास की चर्चा से शुरू हुई है, जिसमें लेखक ने इसके विभिन्न चरणों के बारे में संक्षिप्त किंतु उपयोगी जानकारी दी है। इसमें लेखक ने स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न चरणों की विशेषताओं के साथ व्यावहारिक कमियों को भी उजागर किया है। साथ ही आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास का क्रमबद्ध तरीके से वर्णन किया है। लेखक ने अंग्रेजी राज में प्रतिबंधित, प्रेस अधिनियम के चलते बंद या आर्थिक अभाव की वजह से बंद हुई सभी पत्र-पत्रिकाओं का लगभग पूरा इतिहास खंगालने का प्रयास किया है।

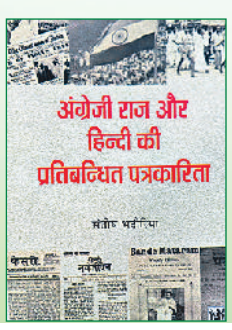

पुस्तक इस मायने में बेहद दिलचस्प है कि प्रतिबंधित पत्रिकाओं में छपे विचार, लेख, कविताओं के अंश भी इसमें दिए गए हैं, जिन्हें आज के समय में पढ़ना एक नए अनुभव से गुजरना है। उस दौर के लेखकों की क्रांतिकारी कविताओं को पढ़कर उस वक्त के भारतीय लोगों के मन में मौजूद राष्ट्रप्रेम के उफान को समझा जा सकता है। मिसाल के तौर पर 'बुंदेलखंड केसरी' में छपी एक कविता को देख सकते हैं, 'देख दशा भारत की हमने निश्चय मन में ठाना है। मातृभूमि की बलिवेदी पर निज बलिदान चढ़ाना है।' प्रतिबंधित पत्र-पत्रिकाओं के छपने के तमाम अनसुने किस्सों को पढ़कर यह पता चलता है कि किताब को लिखने के लिए लेखक ने शोध कार्य में कितना परिश्रम किया है। यह उनके परिश्रम का ही नतीजा है कि किताब ऐतिहासिक विषय पर आधारित होने के बावजूद कहीं भी बोझिल नहीं लगती है। यह पुस्तक उस दौर की प्रतिबंधित पत्रकारिता के क्रमिक इतिहास को सुगठित तरीके से प्रमाणित सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत करती है। *

किताबः अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता, **लेखकः** संतोष भदौरिया, **मूल्यः** 350 रुपए, **प्रकाशकः** लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज

विशेष: जन्माष्टमी, 16 अगस्त

पर्वोल्लास / धीरज बसाक

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को समर्पित जन्माष्टमी का पर्व पूरे देश में असीम श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर देश के कुछ प्रदेशों एवं प्रमुख कृष्ण मंदिरों में मनाए जाने वाले विशेष उत्सवों के बारे में यहां बता रहे हैं विस्तार से।

श्रद्धा-उल्लास से मनाया जाता है देश-विदेश में जन्माष्टमी पर्व

द्वारकाधीश मंदिर द्वारका, गुजरात

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा और वृंदावन है तो उनकी कर्मभूमि द्वारका है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन की अठखेलियां और रास लीलाएं बृज में कीं, तो द्वारका उन्हें द्वारकाधीश यानी द्वारका के राजा के तौर पर जानता है। भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि द्वारका में जन्माष्टमी उत्सव बहुत ही भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस दिन द्वारका के प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर को फूलों और दीयों से सजाया जाता है। इस दिन यहां के खास आकर्षणों में मंगला आरती और झूलन उत्सव प्रमुख हैं। जन्माष्टमी के दिन गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित द्वारका नगरी में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु और पर्यटक यहां इस मंदिर के जन्माष्टमी उत्सव में शामिल होते हैं। *

इंफाल की रास लीला, मणिपुर

देश का उत्तर-पूर्व भी कृष्ण भक्ति में डूबा रहने वाला भू-भाग है। विशेषकर मणिपुर में वैष्णो समुदाय, कृष्ण जन्माष्टमी को पारंपरिक रास लीला और विख्यात मणिपुरी नृत्य के विशिष्ट संयोजन के साथ मनाते हैं। इस दिन पूरे इंफाल में जगह-जगह रास लीलाओं का आयोजन होता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर इंफाल में आयोजित होने वाली रास लीला पूरी दुनिया में विख्यात है। इस रास लीला में भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत भक्तिपूर्ण ढंग से मंचन होता है और यह मंचन विशेष मणिपुरी नृत्य पर आधारित होता है। *

मुंबई का दही हांडी उत्सव, महाराष्ट्र

मुंबई में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव देश के दूसरे हिस्सों से बिल्कुल अलग जोश और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन महाराष्ट्र के लगभग हर शहर में और उसमें भी विशेष तौर पर मुंबई में हर गली में एक ऊंचे स्थान पर दो पेड़ों या दो इमारतों के बीच बंधी रस्सी में बीचों-बीच जहां चारों तरफ खुला मैदान होता है, बहुत ऊंचे एक हांडी बांधी जाती है, जिसमें दही, मिठाईयां और रुपए भरे होते हैं। कृष्ण के बाल सखा माने जाने वाले गोविंदा मानव पिरामिड का आकार बनाकर हवा में हांडी तक पहुंचते हैं और फिर इसे तोड़ते हैं। मुंबई में जन्माष्टमी के दिन गोविंदाओं की टोलियां दही-हांडी उत्सव में घूम-घूमकर हिस्सा लेती हैं और जब एक टोली हांडी तक नहीं पहुंच पाती, तो दूसरी टोली को उसके लिए मौका दिया जाता है। हांडी फोड़ने वाले मित्रमंडल/टोली को उत्सव का आयोजन करने वाली सोसायटी या मुहल्ला पुरस्कृत करता है। *

उडुपी श्रीकृष्ण मठ, कर्नाटक

दक्षिण भारत में कृष्ण भक्तों की श्रद्धा का एक महत्वपूर्ण केंद्र उडुपी है। जन्माष्टमी के दिन कर्नाटक के उडुपी स्थित उडुपी श्रीकृष्ण मठ में विशेष पूजा, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। मंदिर में कृष्ण लीला, नाटक, रथयात्रा और ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान पूरे उडुपी शहर में रात्रि जागरण का माहौल होता है। हर तरफ लोग कृष्ण भक्ति में डूबे दिखते हैं। रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद यह उत्सव अपने चरम पर पहुंचता है और फिर दिनभर भजन कीर्तन में रमे रहने वाले भक्तजन प्रसाद खाकर अपना उपवास-व्रत तोड़ते हैं। द्वारका की तरह ही उडुपी में भी जन्माष्टमी पर देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं। *

विदेशों में जन्माष्टमी उत्सव की छटा

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सिर्फ भारत में ही मनाया जाने वाला उत्सव नहीं है। यह एक वैश्विक उत्सव है। भारत के बाहर नेपाल, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों में भी भव्य जन्माष्टमी उत्सव मनाए जाते हैं। नेपाल के पत्थर गांव और काडमांडू स्थित कृष्ण मंदिरों में इस दिन भक्तों की भीड़ उमड़ती है और नृत्य, भजन संध्या तथा झूलों की परंपरा से उत्सव मनाया जाता है। बांग्लादेश में ढाका स्थित जैसोर में जन्माष्टमी को भव्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन यहां शोभा यात्रा, भगवत गीता पाठ और सांस्कृतिक नाटकों का मंचन होता है। फिजी, मॉरीशस और सूरीनाम में प्रवासी भारतीय समुदाय के लोग कीर्तन मंडलियों के जरिए कृष्णलीला का मंचन और भजन गाते हैं। इसके अलावा लंदन (ब्रिटेन) के इस्कॉन मंदिर, अमेरिका के न्यूयॉर्क, ह्यूस्टन और लॉस एंजिल्स आदि के इस्कॉन मंदिरों में भी जन्माष्टमी में भव्य सांस्कृतिक उत्सव मनाए जाते हैं। इसके साथ ही यूरोप में रूस, यूक्रेन, हंगरी और जर्मनी के इस्कॉन मंदिरों में भी कृष्ण जन्माष्टमी बहुत भव्य तरीके से आयोजित की जाती है। *

काडमांडू स्थित कृष्ण मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव

नया दौर

लोकमित्र गौतम

भगवान कृष्ण के प्रति भक्तिभाव रखने वालों के लिए तो वे पूज्य हैं ही। लेकिन उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण हैं, जो उन्हें आज के युवाओं के लिए भी आइकन बना देता है। इसीलिए देश-दुनिया के युवाओं में जन्माष्टमी की धूम दिखती है।

रील्स-मीम्स के दौर में युवाओं के ग्लोबल आइकन हैं श्रीकृष्ण

आज का दौर तेजी से बदलते दृश्यों और पल भर की लोकप्रियता का दौर है। यही कारण है कि आज बड़े-बड़े त्योहारों और उत्सवों का रंग भी नई पीढ़ी के सिर चढ़कर आसानी से नहीं बोलता। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसी रील्स और मीम्स के दौर में जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक और एक्स पर रील्स, मीम्स और वायरल ट्रेंड संस्कृति का नया चेहरा बन गए हैं, तब जन्माष्टमी दुनिया के लगभग 108 देशों में मनाई जा रही है। और हॉटस्टार जैसे टीवी चैनल जो कि पूरी तरह से खेलों और वेब सीरीज को समर्पित हैं, महीनों पहले से बार-बार विज्ञापन करते हैं कि जन्माष्टमी का कार्यक्रम सीधे प्रसारित किया जाएगा। अगर जन्माष्टमी जैसे पर्व के प्रति पूरी दुनिया में इस किस्म का आकर्षण उभर रहा है, तो इसका अर्थ केवल धार्मिक नहीं है बल्कि इसके पीछे सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल अनुकूलता का गहरा संबंध है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: हर साल भाद्रपद की अष्टमी को मनाया जाने वाला कृष्ण जन्म का पर्व जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति में पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं जन्माष्टमी की रात 12 बजे कंस की जेल में बंद बहन देवकी की कोख से एक दिव्य बालक श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं, जो धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रधार बनते हैं। आमतौर पर मंदिरों में भजन संकीर्तनों तक सीमित रहने वाले श्रीकृष्ण, आज की डिजिटल दुनिया में भरपूर स्वीकृत हुए है, तो इसके कुछ कारण हैं।

कृष्ण केवल भगवान नहीं, एक विचार हैं: आज का युवा सही मायने में वैश्विक नागरिक है। एक ऐसी दुनिया का नागरिक, जो अपनी पारंपरिक संस्कृति से अगर जुड़ना जानता है, तो उसकी बेड़ियों को तोड़ना भी जानता है। हां, यह जरूर है कि आज का युवा अपने करियर की चिंता में रहता है। आज का युवा रिश्तों में उलझा है और जीवन के नए अर्थ तलाश रहा है। आज का युवा सिस्टम से सवाल करता है। ऐसे में श्रीकृष्ण उसका मार्गदर्शन करते हैं। कृष्ण का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। कष्ट और संकटों के बीच जन्म, बचपन में वध के अनेक प्रयास, युवावस्था में युद्ध, राजनीति, मित्रता और प्रेम के भ्रम, फिर भी इन सारी परेशानियों और संघर्षों के बीच कृष्ण मुस्कुराते रहते हैं, नाचते रहते हैं और बांसुरी बजाते रहते हैं। यह इतना उद्दाम जीवन चरित्र है, जो दुनिया भर के, हर संस्कृति के युवाओं को अपनी ओर खींचता है। कृष्ण सीख देते हैं कि जियो और वह भी पूरी लय में, इसलिए वे युवाओं के चहेते बने हुए हैं।

संस्कृति की सॉफ्टपावर: एक तरफ कृष्ण का अद्भुत कैरेक्टर युवाओं को अपनी तरफ चुंबक के माफिक खींचता है, तो दूसरी तरफ जन्माष्टमी का ग्लोबल आकर्षण यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति सीमाओं में कैद नहीं है। यही वजह है कि आज न्यूयॉर्क से लेकर नैरोबी तक और लंदन से लेकर सिडनी तक कृष्ण भक्तों ने जन्माष्टमी को ग्लोबल फेस्टिवल बना दिया है। रासलीला, दही हांडी और कृष्ण जन्मोत्सव आज भारत की विदेशों में सांस्कृतिक पहचान है। सिर्फ पहचान ही नहीं, यह सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा भी है। जन्माष्टमी के गीत, डांस, कॉस्ट्यूम ट्रेंड और डिजिटल झांकियां अब डिजिटल आर्ट और क्रिएटिविटी का हिस्सा हैं। ये बदलाव साबित करते हैं कि कृष्ण ग्लोबल आकर्षण का विषय क्यों हैं? कृष्ण का विचार और कृष्ण का होना उस दौर में भी नया और आधुनिक था और इस दौर में भी नया और आधुनिक है। डिजिटल युग में कृष्ण की प्रासंगिकता पहले से ज्यादा बढ़ गई है।

कृष्ण की यूनिवर्सल अपील: श्रीकृष्ण केवल हिंदू धर्म के देवता भर नहीं हैं। वे एक फिलॉस्फर हैं, वे एक योद्धा हैं, वे एक प्रेमी हैं, वे एक दोस्त हैं, वे एक रणनीतिकार हैं और वे एक मैंटर भी हैं। हर संस्कृति में वह किसी न किसी रूप में फिट बैठते हैं। यही कारण है कि वह हर संस्कृति में स्वीकार्य हैं। *

कहानी

आशा शर्मा

स्वतंत्रता दिवस का यह मतलब कतई नहीं होता कि इस दिन को हम मौज-मस्ती करके बिता दें। राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर देशप्रेम से ओत-प्रोत ना हों। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद ना करें। राष्ट्रीय पर्व के महत्व पर केंद्रित कहानी।

आजाद वीकेंड

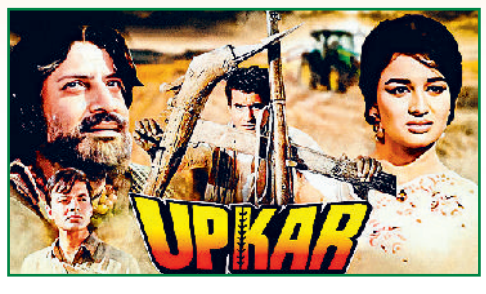

इस बार लंबा वीकेंड आ रहा है, क्यों न ऋषिकेश चलें? सुना है वहां की कैंप लाइफ बहुत शानदार होती है। खाना-पीना और नदी किनारे मस्ती... क्या कहते हो?' बिजी कॉर्पोरेट लाइफ से उकताई राजी को वास्तव में एक ब्रेक की जरूरत महसूस हो रही थी। 'लंबा वीकेंड? कब है यह सुनहरा अवसर?' साथी श्यामली ने चहकते हुए पूछा तो राजी ने टेबल पर रखा कैलेंडर उसके सामने कर दिया। शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस का अवकाश और उसके बाद शनिवार और रविवार... देखते ही श्यामली भी तुरंत तैयार हो गई। समीर और अयान तो जैसे अवसर की तलाश में ही थे। सबने शुक्रवार की सुबह ऋषिकेश जाने का कार्यक्रम बना लिया।

'लेकिन उस दिन तो ऑफिस में भी झंडारोहण होगा ना, उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?' अयान ने प्रश्न उठाया।

'क्या यार अयान...! एक तुम्हारे नहीं होने से क्या वहां का सारा प्रोग्राम कैंसल हो जाएगा? चिल करो यार। आजादी का जश्न मनाने ही तो जा रहे हैं हम लोग।' राजी ने बेपरवाही से कहा और उसके बाद सभी प्रश्न समाप्त हो गए। शुक्रवार यानी स्वतंत्रता दिवस की सुबह छह बजे चारों दोस्त कार से रवाना हुए। समीर गाड़ी चला रहा था, अयान उसकी बगल में बैठा था। राजी और श्यामली पीछे की सीट पर पालथी मारकर बैठी थीं।

सुबह की ठंडी हवा से अठखेलियां करते चारों बढ़े जा रहे थे। रास्ते में आने वाले गांवों में स्कूल जाते हाथों में तिरंगा लिए बच्चे सम्मोहित कर रहे थे। जगह-जगह स्कूल और अन्य प्रतिष्ठानों में देशभक्ति के गीत गूंज रहे थे। जोशीले गाने सुनकर श्यामली के रोम खड़े हो गए। शरीर में सिहरन सी दौड़ गई।

'क्या सचमुच लोग आजादी के लिए इतने दीवाने हो गए थे कि उन्हें मरने तक से डर नहीं लगा? हमें देखो! जरा सा भी दर्द बर्दाश्त नहीं होता।' श्यामली ने अचानक कहा तो सब उसे आश्चर्य से देखने लगे।

'जरूर हुए ही होंगे, आजादी क्या प्लेट में परोसी हुई मिली थी। मेरे दादा जी बताते थे कि उनके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी थे। नेताजी की आजाद हिंद फौज के सिपाही। आज भी उनकी तस्वीर हमारे घर में रखी है।' अयान ने गर्व से बताया और गर्दन घुमाकर बारी-बारी से सबकी तरफ देखा। उसे बाकी दोस्तों की आंखों में अपने लिए अतिरिक्त सम्मान दिखाई दिया। सबके मुंह आश्चर्य से टेढ़े हुए सो अलग। तभी अचानक समीर ने जोरदार ब्रेक लगाया। पीछे की सीट पर बैठी राजी और श्यामली का सिर आगे की सीट से टकरा गया।

'यह क्या पागलपन है समीर? ऐसे कैसे गाड़ी चला रहे हो? मरवाओगे क्या?' सब एक साथ चिल्लाए। 'वो अचानक सामने से वह लंगड़ा व्यक्ति आ गया था। अभी तो मर ही जाता!' कहते हुए झल्लाए समीर ने गाड़ी रोकी और लपक कर नीचे उतरा। देखा तो वह लंगड़ा व्यक्ति अभी भी उसी तरह सड़क के बीचों-बीच खड़ा था।

'मरोगे क्या? इस तरह कौन बीच सड़क पर खड़ा हो जाता है।' समीर उस भिखारी जैसे दिखने वाले बूढ़े दिव्यांग व्यक्ति पर चिल्लाया। वह व्यक्ति अपनी बैसाखी बगल में दबाए चुपचाप सावधान की मुद्रा में खड़ा रहा। अब तक बाकी तीनों भी वहां आ चुके थे। उन्हें भी यह देखकर हैरानी हुई कि उस व्यक्ति के चेहरे पर अभी-अभी घटित होने वाले एक्सीडेंट के बारे में सोचकर किसी भी प्रकार की घबराहट के निशान दिखाई नहीं दे रहे हैं। तभी उस व्यक्ति ने अपनी पोजीशन बदली और बैसाखी को ठीक से अपनी बांह के नीचे दबा लिया।

'सामने उस स्कूल में राष्ट्रगान की धुन बज रही थी ना, इसलिए मैं खड़ा हो गया। माफ करना लेकिन मैं अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के प्रति अपनी भावनाओं और उसके सम्मान को नजरअंदाज नहीं कर सका। आप लोगों को तो शायद पता भी नहीं होगा कि राष्ट्रगान के समय ध्वज के सम्मान में सावधान खड़ा होना चाहिए।' व्यक्ति ने कहा तो सबकी निगाहें झुक गईं। सच जानकर समीर को अपने व्यवहार पर बहुत दुःख हुआ। वह हाथ पकड़ कर उस व्यक्ति को सड़क पार करवाने लगा। तभी उस व्यक्ति ने अपनी बैसाखी हटाई और लकड़ी के सहारे अपने पांवों से चलने लगा। सब एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे। बूढ़े व्यक्ति का यह आचरण किसी के भी समझ में नहीं आया, किंतु वह व्यक्ति उनकी दुविधा समझ गया था।

'मैं भला आजादी की कीमत कैसे भूल सकता हूं। मेरे पिताजी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था और अंग्रेजों की गोली लगने से वे अपना एक पांव गंवा बैठे थे। उन्हीं को याद करते हुए मैं आज के दिन बैसाखी के सहारे चलता हूं ताकि उनकी कुर्बानी भूल नहीं जाऊं। आज की पीढ़ी को भले ही यह मजाक लगता होगा, लेकिन हमारी पीढ़ी के लिए यह दिन कितना महत्व रखता है, यह मैं बता नहीं सकता।' कहते हुए वह व्यक्ति भावुक हो गया। अब तक सब उसका हाथ थामे सड़क के दूसरी पार भी आ गए थे। सबकी निगाहें झुकी हुई थीं।

'मुझे लगता है हमें वापस जाना चाहिए। क्यों न आज के दिन हम कोई देशभक्ति की भावना वाली फिल्म देखें?' राजी ने नया प्रस्ताव रखा तो सब एक बार फिर से हैरान हो गए लेकिन तुरंत संभल भी गए।

'ठीक कहते हो लेकिन उससे पहले ऑफिस जाकर तिरंगे को सलामी देंगे।' अयान ने आगे जोड़ा तो सब एकमत हो गए और अब गाड़ी ऋषिकेश जाने की बजाय ऑफिस की तरफ दौड़ रही थी। *

बॉलीवुड ट्रेंड/ अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों के आरंभिक दौर से ही देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। इन्हें एंटरटेनिंग बनाने के लिए काफी फिल्मी मसाले भी डाले जाते हैं। यही वजह है कि ऐसी फिल्मों को दर्शक भी खूब पसंद करते हैं। देशभक्ति पर आधारित कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

हिंदी फिल्मों में देशभक्ति के रंग

पंद्रह अगस्त हो या छब्बीस जनवरी, राष्ट्रीय पर्व आते ही देशवासियों में देश प्रेम और देशभक्ति की भावनाएं हिलोरे लेने लगती हैं। देश प्रेम की यह भावना हिंदी फिल्मों में भी खूब उभर कर आई है। यह बात अलग है कि समय के साथ हिंदी फिल्मों में देश प्रेम को व्यक्त करने के तरीके बदलते रहे हैं।

ब्रिटिश काल में हिंदी फिल्में

आजादी के पहले देशभक्ति पर आधारित तमाम फिल्मों में ब्रिटिश शासन को निशाने पर रखकर फिल्मकार देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनाते थे। उस दौर में सेंसरशिप सख्त होने के कारण वे सीधे-सीधे तो अंग्रेजों पर हमला नहीं कर सकते थे, लेकिन परोक्ष या सांकेतिक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदी फिल्में और उनके गीत स्वंतत्रता संग्राम का खूब समर्थन करते थे। इस संदर्भ में कवि प्रदीप का लिखा गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' प्रासंगिक है। यह गीत वैसे तो ब्रिटिश राज के विरुद्ध था, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों को इस गीत के बारे में बताया गया कि ब्रिटिश शासन का पक्ष लेकर विश्व युद्ध में उसके खिलाफ लड़ने वालों से कहा जा रहा है कि 'हिंदुस्तान हमारा' अर्थात ब्रिटिश शासन का है।

शुरुआती दौर की फिल्मों में देशभक्ति

आजादी के बाद एक-दो दशक तक बनने वाली देशभक्तिपूर्ण फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को ही ज्यादातर दिखाया जाता रहा। इन फिल्मों में दिलीप कुमार की 'शहीद' प्रमुख थी। उन दिनों शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और झांसी की रानी जैसे महान चरित्रों को केंद्र में रखकर सेल्यूलाइड पर देश प्रेम के रंग भरे गए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के विषय पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' जैसी सार्थक फिल्म बनाई।

देशभक्ति फिल्मों ने मनोज को बनाया भारत कुमार

भगत सिंह के चरित्र पर आधारित फिल्म 'शहीद' की सफलता के बाद मनोज कुमार को जैसे फिल्म निर्माण की एक अलग दिशा मिल गई। इसके चलते ही मनोज कुमार ने 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति', 'रोटी कपड़ा और मकान' जैसी कई फिल्में बनाईं, जो या तो देशभक्ति पर आधारित थीं या इन फिल्मों में कहीं न कहीं देश प्रेम की भावना घुली-मिली थी। इन फिल्मों को दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला। अपनी देशभक्ति आधारित फिल्मों की वजह से ही मनोज कुमार बॉलीवुड में 'भारत कुमार' के रूप में मशहूर हो गए।

बदल गया देशभक्ति फिल्मों का स्वरूप

आगे चलकर, खासतौर से भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद देशभक्ति की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण विषय भारत और पाकिस्तान का युद्ध और आतंकवाद बन गया। जे.पी. दत्ता ने भारत और पाकिस्तान युद्ध पर आधारित फिल्म 'बॉर्डर' का निर्माण किया। इस मल्टी स्टारर फिल्म को दर्शकों का खूब प्यार मिला। 'बॉर्डर' को कुछ हद तक 'हकीकत' की शैली में बनाने का प्रयास किया गया। इस फिल्म के गीत भी खूब लोकप्रिय हुए थे। जावेद अख्तर द्वारा लिखा गया फिल्म का गीत 'संदेसे आते हैं' उन दिनों खूब लोकप्रिय हुआ था। यह गीत 15 अगस्त, 26 जनवरी जैसे अवसरों पर आज भी बजाया जाता है।

निर्माता-निर्देशक अनिल शर्मा की सनी देओल और अमीषा पटेल को लेकर बनाई गई फिल्म 'गदर : एक प्रेम कथा' में भी भारत-पाकिस्तान एंगल था। 'हिंदुस्तान जिंदाबाद था, हिंदुस्तान जिंदाबाद है और हिंदुस्तान जिंदाबाद रहेगा' जैसे देशभक्ति से भरे डायलॉग्स ने फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उसके बाद आई आमिर खान की 'सरफरोश' में भी देशभक्ति का यही रंग था। इसमें आतंकी नेटवर्क के तार पाकिस्तान से जोड़कर दिखाया गया था। इस फिल्म को भी अच्छी सफलता हासिल हुई थी। हालांकि 'बॉर्डर' के बाद न तो जेपी दत्ता सफल हो पाए और न ही अनिल शर्मा बॉक्स ऑफिस पर गदर मचा सके। देशभक्ति पर आधारित उनकी 'रिफ्यूजी' और 'वीर' बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रहीं। हालांकि अनिल शर्मा की 'गदर 2' ने अच्छी सफलता हासिल की।

देशभक्ति फिल्मों का नया ट्रेंड

पिछले कुछ वर्षों से अक्षय कुमार को भारत कुमार की पदवी मिली हुई है। उनकी कई फिल्मों में देशभक्ति की भावना खूब नजर आती है। पाकिस्तान को कोसने, उसकी नापाक हरकतों और उसके आतंकी मंसूबों को भी अक्षय कुमार की कुछ फिल्मों में दिखाया गया है। 'केसरी', 'बेबी', 'एयरलिफ्ट', 'हॉलिडे' और 'रुस्तम' जैसी अक्षय कुमार कई फिल्मों में देशभक्ति के अलग-अलग रंग दिखे। हाल में आई 'केसरी 2' से वह एक बार फिर देश प्रेम की भावना दर्शकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं।

भारतीय युवाओं में क्रिकेट से लेकर राजनीति हर क्षेत्र में पाकिस्तान से आगे रहने और उसे पराजित करने की भावना को उभारने में भी फिल्मकारों को महारथ हासिल है। इसीलिए ऐसी फिल्में भी खूब बनती हैं। *